بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

साप्ताहिक बदर क़ादियान

Weekly Badar Qadian HINDI

اَلَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا وَتَطۡمَئِنُّ قُلُوۡبُہُمۡ بِذِکۡرِ اللّٰہِ
اَلَا بِذِکۡرِ اللّٰہِ تَطۡمَئِنُّ الۡقُلُوۡبُ ○
(الرّعد:29)

अनुवाद: (अर्थात्) वे लोग जो ईमान लाए और जिनके दिल अल्लाह के ज़िक्र से संतुष्ट हो जाते हैं। सुनो! अल्लाह के ज़िक्र से ही दिलों को संतोष मिलता है।

संपादक : शेख मुजाहिद अहमद | उप संपादक : सय्यद मोहियुद्दीन फ़रीद | वर्ष- 11 | अंक-46 | 01 जमादिउल सानी 1448 हिज्री कमरी, 12 नबुव्वत 1405 हिज्री शम्सी, 12 नवम्बर 2026 ई.

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

तीन गुण जिस व्यक्ति में पैदा हो जाएँ, उसने ईमान की मिठास पा ली।

عَنۡ أَنَسٍ رَضِیَ اللّٰہُ عَنۡہُ عَنِ النَّبِیِّ صَلَّی اللّٰہُ عَلَیۡہِ وَسَلَّمَ، قَالَ: "ثَلَاثٌ مَنۡ کُنَّ فِیۡہِ وَجَدَ حَلَاوَۃَ الۡإِیۡمَانِ، أَنۡ یَکُوۡنَ اللّٰہُ وَرَسُوۡلُہٗ أَحَبَّ إِلَیۡہِ مِمَّا سِوَاھُمَا، وَأَنۡ یُحِبَّ الۡمَرۡءَ لَا یُحِبُّہٗ إِلَّا لِلّٰہِ، وَأَنۡ یَکۡرَہَ أَنۡ یَعُوۡدَ فِی الۡکُفۡرِ کَمَا یَکۡرَہُ أَنۡ یُقۡذَفَ فِی النَّارِ"

हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि हज़रत नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि तीन गुण ऐसे हैं कि जिस व्यक्ति में ये पैदा हो जाएँ, उसने ईमान की मिठास पा ली। पहला यह कि अल्लाह और उसका रसूल उसे सबसे अधिक प्यारे हों। दूसरा यह कि वह किसी इंसान से केवल अल्लाह की खुशी के लिए प्रेम रखे। तीसरा यह कि वह कुफ़्र की ओर लौटने को ऐसा बुरा समझे, जैसे आग में डाले जाने को बुरा समझता है। [सहीह बुखारी/किताबुल ईमान/हदीस: 16]



हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम इमाम मेहदी - मसीह मौऊद का उपदेश

हमारा स्वर्ग हमारा खुदा है

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"हमारा स्वर्ग हमारा खुदा है। हमारी सबसे बड़ी खुशियाँ हमारे खुदा में हैं, क्योंकि हमने उसे देखा और हर प्रकार की सुंदरता उसी में पाई। यह दौलत पाने के योग्य है, चाहे जान देने से मिले। और यह लाल खरीदने के योग्य है, चाहे अपना पूरा अस्तित्व खोने से प्राप्त हो। ऐ वंचित लोगो! इस चश्मे की ओर दौड़ो, क्योंकि यह तुम्हें पानी पिलाकर तृप्त करेगा। यह जीवन का चश्मा है, जो तुम्हें बचाएगा। मैं क्या करूँ और किस तरह इस खुशखबरी को लोगों के दिलों में बैठा दूँ? किस ढोल को बजाकर मैं बाज़ारों में ऐलान करूँ कि तुम्हारा यही खुदा है, ताकि लोग सुन लें। और किस दवा से मैं इलाज करूँ, ताकि सुनने के लिए लोगों के कान खुल जाएँ।"

(कश्ती नूह, रूहानी ख़ज़ाइन, जिल्द 19, पृष्ठ 21-22)

इसके अतिरिक्त फ़रमाया: "जब किसी के अस्तित्व को अंतिम सीमा तक आवश्यक समझा जाता है, तो वह पूज्य बन जाता है और यह केवल खुदा तआला का ही अस्तित्व है, जिसका कोई दूसरा समान नहीं है। किसी इंसान या दूसरी मख़लूक़ के लिए ऐसा नहीं कह सकते।" (मल्फ़ूज़ात, जिल्द 8, पृष्ठ 165, संस्करण 1984 ई.)

मनुष्य के जन्म का असली उद्देश्य खुदा तआला की याद और उसका स्मरण है

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं: "इसलिए मनुष्य के जन्म का असली उद्देश्य खुदा तआला की याद और उसका स्मरण ही है। जब खुदा मिल जाता है तो न कोई जलन रहती है और न कोई बेचैनी, बल्कि मन को शांति मिल जाती है। जो लोग दुनिया की चीज़ों को पाने की कोशिश में लगे रहते हैं, उन्हें जितनी अधिक तरक्की मिलती जाती है, उनकी जलन उतनी ही बढ़ती जाती है। लेकिन जो खुदा तआला की ओर जाता है और जितना अधिक उसकी ओर ध्यान लगाता है, उसके दिल को उतनी ही अधिक शांति मिलती जाती है। इससे साबित होता है कि खुदा तआला ने अपनी पहचान पाने की कोशिश को ही हमारे जीवन का असली उद्देश्य ठहराया है। इसलिए जब यह उद्देश्य पूरा हो जाता है तो मनुष्य को शांति मिल जाती है।

हमारे राजाओं को ही देख लो। हालाँकि सरकार के द्वारा उनकी सुरक्षा की जाती है, फिर भी कुछ राजाओं के डर का यह हाल है कि विदेश से बंद बोतलों में पानी आता है। उसे उनके सामने खोला जाता है। फिर भी पहले दूसरों को पानी पिलाया जाता है और उसके बाद राजा साहब पानी पीते हैं। इसी तरह उनके खाने का हाल है कि उसे बहुत सारी सावधानियों के साथ तैयार किया जाता है। फिर सबसे पहले उसी व्यक्ति को खिलाया जाता है जिसने खाना पकाया हो। उसके बाद डॉक्टर उसे खाता है। फिर वह खाना उनके सामने पेश किया जाता है। मानो हर समय खतरा बना रहता है और हर समय सावधानी बरती जाती है। हर समय बेचैनी रहती है।

लेकिन हमारे मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखो। चारों ओर दुश्मन ही दुश्मन हैं, फिर भी आपको कोई डर नहीं है। आप पूरी शांति और प्रसन्नता में रहते हैं। यदि कोई दुश्मन भी आपको खाने पर बुलाता है तो आप बिना किसी डर के चले जाते हैं। एक बार एक यहूदी औरत ने आपको ज़हर भी दे दिया था, लेकिन फिर भी अल्लाह तआला के संदेश से आपको इस बात का पता चल गया और आप उससे सुरक्षित रहे। (सीरतुन्नबी, इब्ने हिशाम, ख़ैबर की घटना के अंतर्गत)

आपको इतनी शांति क्यों प्राप्त थी? इसका कारण यही था कि आपने ऐसी महान हस्ती से संबंध जोड़ रखा था जो छिपी हुई बातों को जानती है। जब किसी का उससे संबंध जुड़ जाता है तो वह अपनी छिपी हुई बातों में से आवश्यकता के अनुसार अपने बंदे को भी हिस्सा देता रहता है। इसलिए उससे संबंध रखने वाला व्यक्ति हमेशा निश्चिंत रहता है।" (तफ़सीरे कबीर, जिल्द 5, पृष्ठ 67, अर-रअद 13, ऑनलाइन संस्करण)

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनसिहिल अज़ीज़ सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, का संदेश, मजलिस अंसारुल्लाह भारत के वार्षिक राष्ट्रीय सम्मेलन 2026 के अवसर पर

प्यारे सदस्यों, मजलिस अंसारुल्लाह भारत!

अस्सलामु अलैकुम व रहमतुल्लाहि व बरकातुहू।

अल्हम्दुलिल्लाह! अल्लाह तआला ने आपको अपना वार्षिक सम्मेलन आयोजित करने का अवसर दिया है। अल्लाह तआला इसे हर दृष्टि से सफल और बरकतों वाला बनाए। आमीन।

मैं इस अवसर पर आपको कुछ महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारियों की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूँ।

मजलिस अंसारुल्लाह के सदस्यों को अपना सच्चा आत्मनिरीक्षण करना चाहिए कि क्या हम अपने जीवन को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की इच्छा के अनुसार ढालने की कोशिश कर रहे हैं? यदि हम अपना आत्मनिरीक्षण करें तो अंसारुल्लाह कहलाने के बावजूद हमारी हालत चिंता करने योग्य है। आप अलैहिस्सलाम तो जमाअत के हर सदस्य से ऊँचे स्तर की उम्मीद रखते हैं। फिर यह कैसे हो सकता है कि हम अंसारुल्लाह कहलाएँ और उन बातों पर पूरा ध्यान न दें, जिन पर ध्यान देना हमारा कर्तव्य है।

हमें अपने घरों का वातावरण ऐसा बनाना है, जहाँ पवित्र उदाहरण कायम हों। हमें अपनी पत्नियों और बच्चों के सामने तथा अपने समाज और आसपास के वातावरण में ऐसे उदाहरण पेश करने हैं, जो समाज की भलाई और सुधार के लिए रास्ता दिखाने वाले हों।

हमें अपनी आने वाली पीढ़ियों के सुधार के लिए, उन्हें बुराइयों से बचाने के लिए, उनके दिलों में धर्म का प्रेम पैदा करने के लिए, उन्हें खुदा तआला से जोड़ने के लिए और उनके दिलों में जमाअत के प्रति आदर और लगाव पैदा करने के लिए ऐसे उदाहरण कायम करने चाहिए, जो दूसरों के लिए मिसाल बनें।

बच्चों की अच्छी परवरिश के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक उपाय बताया है और वह यह है कि उनके लिए दुआ करो। जैसा कि आप अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"सही मार्ग दिखाना और सच्ची शिक्षा देना वास्तव में खुदा तआला का काम है। बच्चों के पीछे बहुत अधिक पड़ना और किसी एक बात पर ज़रूरत से ज़्यादा ज़ोर देना, अर्थात् हर छोटी-छोटी बात पर बच्चों को रोकना और टोकना, यह दिखाता है कि मानो हम ही सही रास्ता दिखाने के मालिक हैं और हम उन्हें अपनी इच्छा के अनुसार किसी रास्ते पर ले आएँगे। यह एक प्रकार का छिपा हुआ शिर्क है। हमारी जमाअत को इससे बचना चाहिए। हम तो अपने बच्चों के लिए दुआ करते हैं और सामान्य रूप से शिक्षा के नियमों और आदाब का पालन करवाते हैं। बस, इससे अधिक कुछ नहीं करते और फिर अपना पूरा भरोसा अल्लाह तआला पर रखते हैं। जिस बच्चे में भलाई का बीज होगा, वह समय आने पर हरा-भरा हो जाएगा।"

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 2, पृष्ठ 5)

इसलिए बच्चों की अच्छी परवरिश में नेक उदाहरणों और दुआ का बहुत गहरा संबंध है। इस ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। पाँचों समय की नमाज़ों की पाबंदी करें और खुदा तआला से अपने संबंध को बढ़ाने की कोशिश करें।

वास्तव में जब कोई ईमान वाला और परहेज़गार विनीत अपने आपको खुदा तआला के हवाले कर देता है तो फिर अल्लाह तआला स्वयं उसका ज़िम्मेदार बन जाता है। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक स्थान पर फ़रमाते हैं:

"अल्लाह तआला ऐसे लोगों का स्वयं संरक्षक बन जाता है, जैसा कि वह फ़रमाता है: وَهُوَ يَتَوَلَّى الصّٰلِحِيْنَ (अल-आराफ़: 197)। अर्थात् वह नेक लोगों का साथ देता है और उनका संरक्षक बन जाता है। हदीस शरीफ़ में आया है कि अल्लाह तआला उनका हाथ बन जाता है, जिससे वे पकड़ते हैं। उनकी आँख बन जाता है, जिससे वे देखते हैं। उनके कान बन जाता है, जिससे वे सुनते हैं और उनके पाँव बन जाता है, जिनसे वे चलते हैं। एक और हदीस में है कि जो मेरे किसी प्रिय बंदे से दुश्मनी करता है, मैं उससे कहता हूँ कि मेरे मुकाबले के लिए तैयार हो जा। एक स्थान पर फ़रमाया है कि जब कोई खुदा के किसी प्रिय बंदे पर हमला करता है तो खुदा तआला उस पर इस तरह झपटता है, जैसे कोई व्यक्ति शेरनी से उसका बच्चा छीनने की कोशिश करे तो वह गुस्से में उस पर झपटती है।"

(मल्फ़ूज़ात, जिल्द 2, पृष्ठ 681-680)

इसलिए वे लोग कितने खुशकिस्मत हैं, जिनका संरक्षक अल्लाह तआला बन जाता है। जिनका संरक्षक खुदा तआला हो जाता है, उनके दुख और डर दूर हो जाते हैं और उनका ध्यान भविष्य में नेक काम करने की ओर लग जाता है।

याद रखें कि जब हमारा अल्लाह तआला से ऐसा संबंध पैदा होगा और दुआ पर इतना विश्वास होगा कि हम यह समझेंगे कि दुआ के बिना हमारा गुज़ारा नहीं हो सकता, अपनी पाँचों समय की नमाज़ों में रोकर दुआ करने और दिल में दर्द तथा तड़प पैदा करने की कोशिश करेंगे और अपने बच्चों के लिए विशेष रूप से दुआएँ करेंगे, तो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से हमारी आने वाली पीढ़ियाँ सुरक्षित रहेंगी। वे हमेशा धर्म से जुड़ी रहेंगी और खुदा तआला से उनका संबंध भी लगातार मज़बूत होता चला जाएगा।

अल्लाह तआला आपको यह सामर्थ्य प्रदान करे कि आप अपनी हालतों में बदलाव लाने वाले बनें, अपने बच्चों की हालतों में सुधार पैदा करने की कोशिश करें और अपने घरों के वातावरण को शांतिपूर्ण बनाए रखने वाले हों। आमीन।

अख़बार बदर खुद भी पढ़ें और अपने मित्रों व परिचितों को भी इसे पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें

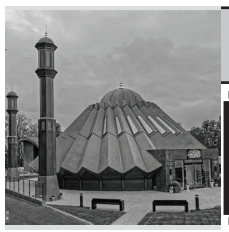
हमारे मार्गदर्शक हज़रत खलीफ़तुल मसीह पंचम (अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़) ने अख़बार बदर के दिसंबर 2014 के विशेषांक के लिए अपना संदेश भेजते हुए फ़रमाया:

"अख़बार बदर के प्रबंधन और पाठकों को यह बात सदैव याद रखनी चाहिए कि इस अख़बार का प्रकाशन जमाअत के सदस्यों की आध्यात्मिक सुधार और प्रगति के लिए किया गया था। हमारे बुजुर्गों ने प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद, पूर्ण लगन के साथ इसे निरंतर जारी रखने का प्रयास किया और उनकी प्रार्थनाओं पवित्र प्रयासों के आशीर्वाद से ही यह आज तक प्रकाशित हो रहा है। यह बात इस मांग को जन्म देती है कि अधिक से अधिक अहमदी इसे पढ़ें और इससे लाभ उठाएं। अल्लाह तआला अपनी कृपा से भारत के अहमदियों को विशेष रूप से और दुनिया भर में रहने वाले अहमदियों को सामान्य रूप से, इसके अध्ययन और इससे जुड़े आशीर्वादों को प्राप्त करने की सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन।"

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यद-हुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के इस अत्यंत महत्वपूर्ण और ज्ञानवर्धक उपदेश को ध्यान में रखते हुए, अहमदिया जमाअत के सदस्यों से विनम्र निवेदन है कि प्रत्येक घर में अख़बार बदर के अध्ययन को सुनिश्चित करना अत्यावश्यक है। अख़बार बदर में कुरआन व हदीस और हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) के उच्च वचनों के अतिरिक्त, हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के जुमअः के उपदेश, भाषणों, साथ ही साथ हज़ूर अनवर के विभिन्न देशों की पवित्र यात्राओं की अत्यंत रोचक और ईमान बढ़ाने वाली रिपोर्टें नियमित रूप से प्रकाशित होती हैं, जिनका अध्ययन प्रत्येक अहमदी के लिए आवश्यक है। अल्लाह तआला की कृपा और हमारे मार्गदर्शक हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की दया से अब यह अख़बार उर्दू के अतिरिक्त हिंदी, बांग्ला, तमिल, तेलुगू, मलयालम, उड़िया और कन्नड़ भाषाओं में भी प्रकाशित हो रहा है। जिन अहमदी साथियों ने अभी तक अख़बार बदर अपने नाम से जारी नहीं करवाया है, उनसे अनुरोध है कि अख़बार बदर अपने नाम से जारी करवाकर स्वयं भी इसका अध्ययन करें और अपने बच्चों और घर के अन्य सदस्यों को भी इसे पढ़ने का अवसर प्रदान करें। अल्लाह तआला हमें हमारे हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के उपदेशों पर, उनकी वास्तविक भावना के अनुसार, पूर्ण रूप से अमल करने की सामर्थ्य प्रदान करे। आमीन।

अख़बार बदर के समय पर न पहुंचने, चंदे की अदायगी, या किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए कृपया कार्यालय प्रबंधक, साप्ताहिक अख़बार बदर से संपर्क करें। (प्रबंधन)

★ ★ ★



ख़ुत्बः जुमअः

सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़,
दिनांक 18 सितम्बर 2026 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

अल्लाह पर भरोसा करने के बारे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जीवनी का विश्वास जगाने वाला ज़िक्र

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ
رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔
اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ
وَلَاالضَّآلِّيْنَ

पिछले ख़ुत्बे में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अल्लाह तआला पर भरोसे का ज़िक्र करते हुए मैंने मक्का से आपकी हिजरत के बारे में कुछ घटनाएँ बयान की थीं।

इस सफ़र की कुछ और घटनाओं का भी विस्तार से ज़िक्र मिलता है। इन घटनाओं से अल्लाह तआला पर आपके भरोसे की एक और महान झलक दिखाई देती है।

रिवायत में आता है कि हिजरत के इस अवसर पर सुराक़ा बिन मालिक ने इनाम के लालच में नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पीछा करने का इरादा किया। इस घटना को सुराक़ा बिन मालिक ने स्वयं इस तरह बयान किया है। बाद में वे मुसलमान हो गए थे और इस्लाम स्वीकार करने के बाद उन्होंने स्वयं यह घटना सुनाई। वे कहते हैं कि हमारे पास क़ुरैश के कुछ लोग संदेश लेकर आए। उन लोगों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु, दोनों को पकड़ने या क़त्ल करने वाले के लिए इनाम तय किया हुआ था। सुराक़ा कहते हैं कि मैं अपनी क़ौम बनू मुदलिज की एक सभा में बैठा हुआ था। इतने में एक आदमी वहाँ आया और हमारे सामने खड़ा होकर कहने लगा कि ऐ सुराक़ा! मैंने समुद्र के किनारे की ओर कुछ परछाइयाँ देखी हैं। या उसने कहा कि मैंने तीन आदमियों का एक दल जाते हुए देखा है। मेरा ख़याल है कि वे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उनके साथी ही थे।

सुराक़ा बिन मालिक कहते हैं कि मैं समझ गया कि वास्तव में वह मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ही क़ाफ़िला होगा, लेकिन मैं नहीं चाहता था कि कोई और भी इस इनाम में मेरा साझीदार बने। इसलिए मैंने तुरंत उस स्थिति को सँभाल लिया और ख़बर देने वाले को आँख से इशारा किया कि वह चुप रहे। फिर मैंने स्वयं कहा कि नहीं, नहीं! वह मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का क़ाफ़िला नहीं हो सकता। जिन लोगों की तुम बात कर रहे हो, वे तो अभी हमारे सामने से गुज़रे हैं। वे फलाँ क़बीले के लोग हैं, जो अपनी खोई हुई ऊँटनी की तलाश में जा रहे थे।

सुराक़ा कहते हैं कि मैं कुछ देर उसी सभा में बैठा रहा ताकि किसी को मुझ पर शक न हो। फिर मैंने अपनी एक सेविका से कहा कि वह मेरी तेज़ दौड़ने वाली घोड़ी को लेकर घर के पीछे फलाँ जगह पर खड़ी हो जाए और मेरा इंतज़ार करे। कुछ देर बाद मैं स्वयं वहाँ पहुँच गया। वे बताते हैं कि मैंने तीरों से शकुन लिया, लेकिन शकुन मेरे इस सफ़र के विरुद्ध निकला। फिर भी मैंने इसकी परवाह नहीं की और घोड़ी को एड़ लगाकर तेज़ी से उस क़ाफ़िले का पीछा करने लगा। मुझे पूरा विश्वास था कि वह हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का ही क़ाफ़िला था।

सुराक़ा कहते हैं कि मैं लगातार घोड़ी दौड़ाता हुआ जल्द ही उस क़ाफ़िले के क़रीब पहुँच गया। अभी कुछ ही दूरी पर था कि मेरी घोड़ी ने अचानक ऐसी ठोकर खाई जो उसके लिए असामान्य थी और मैं उससे नीचे गिर पड़ा। फिर मैं उठा और दोबारा तीरों से शकुन लिया। इस बार भी शकुन मेरे इरादे के विरुद्ध निकला, लेकिन मैं मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को पकड़कर वापस ले जाना चाहता था ताकि सौ (100) ऊँटनियों का इनाम हासिल कर सकूँ।

फिर मैं उठा और घोड़ी पर सवार हो गया। अब मैं इतना क़रीब पहुँच चुका था कि न केवल मैं पहचान गया था कि ये मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु हैं, बल्कि मुझे मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की क़ुरआन करीम पढ़ने की आवाज़ भी सुनाई दे रही थी। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इधर-उधर नहीं देख रहे थे, जबकि हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु बार-बार पीछे मुड़कर देख रहे थे। शायद हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुरक्षा के लिए भी चारों ओर देख रहे थे।

वे कहते हैं कि इतने में मेरी घोड़ी ने फिर ठोकर खाई और उसकी टाँगें रेत में धँस गईं। मैं फिर उससे नीचे गिर पड़ा। मैंने घोड़ी को डाँटा और उठकर खड़ा हुआ, लेकिन वह अपनी टाँगें ज़मीन से बाहर नहीं निकाल पा रही थी। आख़िर जब वह सीधी खड़ी हुई तो उसकी दोनों टाँगों से धूल उठी और धुएँ की तरह हवा में फैल गई। मैंने दोबारा तीरों से शकुन लिया तो इस बार भी वही निकला जो मुझे पसंद नहीं था। तब मैंने वहीं से आवाज़ लगाकर कहा कि मेरी ओर से आप लोगों को कोई नुक़सान नहीं पहुँचाया जाएगा।

इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया कि इससे पूछो, यह क्या चाहता है? उसने कहा कि मैं सुराक़ा हूँ और आप लोगों से बात करना चाहता हूँ। इस पर आप रुक गए।

सुराक़ा बताने लगा कि मक्का वालों ने आप दोनों को जीवित या मृत पकड़कर लाने पर सौ (100) ऊँटनियों का इनाम तय किया है और मैं उसी लालच में आपका पीछा करते हुए आया हूँ। लेकिन मेरे साथ जो कुछ हुआ है, उससे मुझे विश्वास हो गया है कि आपका पीछा करना ठीक नहीं है।

उसने नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को सफ़र का सामान देने की भी पेशकश की और कहा कि यदि खाने-पीने या सफ़र के लिए किसी चीज़ की ज़रूरत हो तो आप ले लें। लेकिन आपने उसकी पेशकश स्वीकार नहीं की। केवल इतना फ़रमाया कि हमारे बारे में किसी को मत बताना। उसने यह वादा किया और साथ ही यह भी कहा कि मुझे विश्वास है कि एक दिन आप बादशाह बनेंगे। मुझे कोई लिखित वचन दे दीजिए कि जब उस समय मैं आपकी सेवा में उपस्थित होऊँ तो मेरे साथ इज़्ज़त और सम्मान से व्यवहार किया जाए। कुछ रिवायतों के अनुसार उसने सुरक्षा का लिखित वचन माँगा था। चुनाँचे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश पर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने और एक दूसरी रिवायत के अनुसार आमिर बिन फ़ुहैरा ने उसे यह लिखकर दे दिया। वह यह लिखित वचन लेकर वापस चला गया।

[(सहीह बुख़ारी, किताब मनाक़िबुल अंसार, बाब हिजरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम व अस्हाबिही इलल मदीना, हदीस 3906; सुबुलुल हुदा वर्रशाद, भाग 3, पृष्ठ 248, क़िस्सा सुराक़ा, दारुल कुतुबुल इल्मिय्या, बेरूत, 1993 ई.; मुहम्मद रसूलुल्लाह वल्लज़ीना मआहू, भाग 3, पृष्ठ 64-65, मक्तबा मिस्र]

यह थी आपके अल्लाह तआला पर भरोसे की शान। आपको कोई डर नहीं था और आप अल्लाह तआला का कलाम पढ़ते हुए जा रहे थे। आपको इस बात पर इतना विश्वास था कि आपका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता कि जब उसने आपसे सुरक्षा का लिखित वचन माँगा तो आपने उसे वह भी लिखकर दे दिया। उसे तो यह ख़याल था कि आख़िर में आपकी जीत होगी, लेकिन आपको इससे भी बढ़कर विश्वास था कि निश्चय ही मेरी जीत होगी। इसलिए आपने उसे सुरक्षा का लिखित वचन भी दे दिया।

एक और रिवायत के अनुसार, जब वह वापस लौट रहा था तो नबी अकरम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उसे संबोधित करते हुए फ़रमाया:

सुराक़ा! उस समय तुम्हारा क्या हाल होगा जब किसरा के कंगन तुम्हारे हाथों में होंगे।

सुराक़ा हैरान होकर पलटा और कहने लगा कि किसरा बिन हुरमुज़ के? आपने फ़रमाया, हाँ! वही किसरा बिन हुरमुज़। चुनाँचे जब हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ख़िलाफ़त के समय किसरा के कंगन, उसका ताज और कमरबंद लाया गया तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने सुराक़ा को बुलाया और फ़रमाया कि अपने हाथ ऊपर करो। फिर उन्होंने उसे वे कंगन पहनाए और फ़रमाया कि कहो, सब प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने किसरा बिन हुरमुज़ से ये दोनों चीज़ें छीनकर तुम्हें प्रदान की हैं।

(मुहम्मद रसूलुल्लाह वल्लज़ीना मआहू, अब्दुल हमीद जौदा सहार, भाग 3, पृष्ठ 65, अल-हिजरत, मक्तबा मिस्र)

इस सफ़र की घटना को हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी अपने

शब्दों में बयान किया है। आप फ़रमाते हैं:

"हिजरत की घटना भी एक बड़ी अनोखी और भय पैदा करने वाली घटना है। सारा अरब विरोधी था और आपके ख़ून का प्यासा था, लेकिन रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम केवल एक साथी को लेकर मदीना की ओर चल पड़े। रास्ते में वे सभी क़ौमें आबाद थीं, जो धर्म के विरोध के कारण आपको मारने की ताक में रहती थीं और केवल क़ुरैश के डर से चुप थीं। लेकिन अब वह समय आ गया था जब क़ुरैश स्वयं आपके क़त्ल के पीछे पड़े हुए थे। सभी अरब क़बीलों को यह तसल्ली थी कि यदि हमने इस व्यक्ति को क़त्ल कर दिया तो क़ुरैश को नाराज़ होने का कोई कारण नहीं होगा।

केवल यही नहीं कि अब क़ुरैश की नाराज़गी का डर नहीं रहा था, बल्कि क़ुरैश ने रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को मक्का से बाहर देखकर आपके क़त्ल पर इनाम भी तय कर दिया था। मदीना के रास्ते में जितने भी क़बीले आबाद थे, उन सभी को यह ख़बर दे दी गई थी कि जो व्यक्ति रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु को जीवित या मृत पकड़कर लाएगा, उसे प्रत्येक के लिए सौ-सौ ऊँटनियाँ इनाम में दी जाएँगी।

अरब के क़बीले, जिनका जीवन ही लूटमार करके गुज़रता था और जो ईर्ष्या की आग में पहले ही जलकर कोयला हो रहे थे, वे इस अवसर को हाथ से कैसे जाने दे सकते थे। हर ओर आपकी तलाश शुरू हो गई और ऐसा लगता था कि आप जो भी क़दम उठाते, हर क़दम पर किसी ख़ून के प्यासे दुश्मन से सामना होने का डर था।

ऐसे अवसरों पर अक्सर देखा गया है कि बड़े से बड़ा बहादुर इंसान भी हिम्मत हार बैठता है और आख़िरी कोशिश करने की शक्ति भी खो देता है। यदि कोई बहुत दिलेर और असाधारण रूप से मज़बूत दिल वाला इंसान हो, तब भी उस पर डर इस तरह हावी हो जाता है कि उसकी हर हरकत से उसका डर दिखाई देने लगता है।

मैंने इतिहास में बड़े-बड़े बहादुरों के किस्से पढ़े हैं, लेकिन ऐसे अवसरों पर उनकी जो हालत होती है, उसकी तुलना रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की इस घटना से करना भी उचित नहीं है। इतिहासकार जानते हैं कि भागते हुए नेपोलियन की क्या हालत थी और उसके चेहरे पर दुख के कितने साफ़ निशान दिखाई देते थे। वे यह भी जानते हैं कि हुमायूँ, जो हिंदुस्तान का बादशाह था, किस तरह बार-बार अपने आपको दुश्मनों के हवाले करने के लिए तैयार हो जाता था। यदि उसके साथ कुछ बहुत वफ़ादार सेनापति न होते तो शायद वह ऐसा कर भी देता।

इसी तरह और भी बहुत से बड़े बहादुर सेनापति गुज़रे हैं, जिन पर कठिनाइयों के दिन आए और ऐसे समय में जब दुश्मन उन्हें चारों ओर से तलाश कर रहा था तो वे घबरा गए। लेकिन

रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम इन दुनियावी लोगों में से नहीं थे। आपकी निगाहें दुनिया की ओर नहीं लगी हुई थीं, बल्कि आपकी नज़र अल्लाह तआला की ओर उठी हुई थी। दुनिया के साधन आपकी निगाह में नहीं थे।

आप यह नहीं सोच रहे थे कि ऐसे समय में मैं अकेला, केवल एक साथी के साथ क्या कर सकता हूँ और इस ख़तरनाक रास्ते में यदि दुश्मन सामने आ गया तो उससे मुक़ाबला करने के लिए मेरे पास क्या साधन हैं, बल्कि

आप यह देख रहे थे कि मेरे साथ वह अल्लाह है, जो हमेशा से अपने नेक बंदों की रक्षा करता आया है और जिसके वार का कोई दुश्मन मुक़ाबला नहीं कर सकता।

वही अल्लाह नूह अलैहिस्सलाम का अल्लाह, इब्राहीम अलैहिस्सलाम का अल्लाह, मूसा अलैहिस्सलाम का अल्लाह, यूनुस अलैहिस्सलाम का अल्लाह, अय्यूब अलैहिस्सलाम का अल्लाह, दाऊद अलैहिस्सलाम का अल्लाह, सुलेमान अलैहिस्सलाम का अल्लाह और मसीह अलैहिस्सलाम का अल्लाह था। वही मेरा अल्लाह है। उसकी शक्तियाँ कभी समाप्त नहीं होतीं और वह एक पल के लिए भी ग़ाफ़िल नहीं होता।

सुराक़ा बिन जुअशम लालच और दुश्मनी में पागल होकर आता है और दूर से देखकर आपकी ओर घोड़ा दौड़ा देता है। उसके दिल में आशा की लहरें समुद्र की तरह उठ रही हैं। वह केवल अपने धर्म का विरोध करने वाले के ख़ून से अपने हाथ रंगकर अपने जले हुए दिल को सुकून ही नहीं देना चाहता, बल्कि दो सौ ऊँटनियों का इनाम भी पाना चाहता है। अर्थात् आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के लिए सौ (100) ऊँटनियों का इनाम तय था और हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु के लिए भी सौ (100) ऊँटनियों का इनाम था। इस तरह उसे कुल दो सौ (200) ऊँटनियों का इनाम मिल सकता था। पहले रिवायत में सौ ऊँटनियों का ज़िक्र है, लेकिन दो सौ ऊँटनियाँ दोनों के लिए अलग-अलग सौ-सौ करके थीं।

यह इनाम उसे अपनी क़ौम में बहुत बड़ा दर्जा दिलाने के लिए काफ़ी था। इससे उसका हौसला और भी बढ़ जाता है। जिस तरह शिकारी अपने शिकार को देखकर उसकी ओर झपटता है, उसी तरह वह रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को देखकर आपकी ओर दौड़ता है। उसके हाथ में तीर और कमान है और वह चाहता है कि आप पर हमला करे। वह अकेला नहीं है, बल्कि यदि वह एक आवाज़ लगा दे तो अपने आस-पास हज़ारों लोगों को इकट्ठा कर सकता है। यदि वह आवाज़ देता तो आस-पास के क़बीलों के कुछ लोग, जो संभव है कि क़रीब ही हों, आ सकते थे, क्योंकि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उस समय उसी के क्षेत्र से गुज़र रहे थे।

लेकिन आप उस समय क्या करते हैं? क्या भाग जाते हैं? क्या डरकर अपने आपको उसके हवाले कर देते हैं? क्या आपके क़दम लड़खड़ाने लगते हैं? क्या आपकी बुद्धि काम करना छोड़ देती है? क्या आप उसे क़त्ल करके वहाँ से भाग जाने का इरादा करते हैं? वह इतना क़रीब आ चुका था और अकेला था, इसलिए आप भी तीर चलाकर उसे मार सकते थे।

नहीं! अल्लाह पर भरोसा करने वाला वह इंसान इनमें से कोई भी काम नहीं करता। आप सुराक़ा की उतनी भी परवाह नहीं करते जितनी एक बैल की की जाती है। हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु, इतनी हिम्मत और बहादुरी, इतने ईमान और विश्वास तथा इतने भरोसे के बावजूद बार-बार मुड़कर देखते जाते हैं कि सुराक़ा अब हमारे कितने क़रीब आ गया है। लेकिन रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसकी बिल्कुल परवाह नहीं करते। घबराना और भागना तो दूर, आपने डर का कोई संकेत तक नहीं दिया और एक बार भी मुड़कर उसकी ओर नहीं देखा।

इस बात ने सुराक़ा को हैरानी में डाल दिया और उसकी आँखें खुल गईं कि मैं किस इंसान का पीछा कर रहा हूँ। वह जीवन भर इस दृश्य को अपनी याददाश्त से नहीं मिटा सका। बल्कि इस असाधारण घटना का उसके दिल पर ऐसा प्रभाव पड़ा कि वह हमेशा इसका ज़िक्र किया करता था और कहता था कि मैं घोड़ा दौड़ाते-दौड़ाते रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के इतने क़रीब पहुँच गया कि मुझे आपके क़ुरआन पढ़ने की आवाज़ सुनाई देने लगी। मैंने देखा कि रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम बिल्कुल दाएँ-बाएँ नहीं देख रहे थे। हाँ, हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु बार-बार पीछे मुड़कर देख रहे थे।

अल्लाह अल्लाह! अल्लाह तआला पर कैसा भरोसा था। दुश्मन घोड़ा दौड़ाता हुआ इतना क़रीब आ गया था कि आपकी आवाज़ उस तक पहुँच सकती थी और आप उसके तीर की मार की दूरी में आ चुके थे। लेकिन आप घबराहट महसूस करना तो दूर, क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते चले जा रहे थे।

दूसरी ओर हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु बार-बार देख रहे थे कि अब दुश्मन कितनी दूरी पर पहुँच गया है।

क्या अल्लाह तआला पर ऐसे भरोसे और विश्वास की कोई दूसरी मिसाल भी मिल सकती है? क्या कोई ऐसा इंसान है जिसने इतने ख़तरनाक समय में इतनी बेपरवाही और निश्चिंतता दिखाई हो?

यदि आप दुनिया के साधनों को इस्तेमाल करने के बारे में भी सोचते तो कम से कम इतना ज़रूर होना चाहिए था कि आप उस समय या तो सुराक़ा पर हमला करने की कोशिश करते या वहाँ से तेज़ी से निकल जाने का प्रयास करते। लेकिन आपने इन दोनों में से कोई भी रास्ता नहीं अपनाया। न तो आपने अपनी चाल तेज़ की और न ही यह इरादा किया कि किसी तरह सुराक़ा को मार दें। बल्कि आप पूरी शांति के साथ, बिना किसी डर या घबराहट के, अपनी पहली गति से क़ुरआन शरीफ़ पढ़ते हुए चलते रहे।

**वह कौन-सी चीज़ थी जिसने उस समय आपके दिल को इतना मज़बूत कर दिया था? वह कौन-सी शक्ति थी जिसने आपके हौसले को इतना ऊँचा कर दिया था? वह कौन-सी आत्मिक शक्ति थी जिसने आपके अंदर इस तरह का असाधारण जीवन पैदा कर दिया था? यह अल्लाह तआला पर भरोसे के चमत्कार थे। यह उस पर विश्वास करने के परिणाम थे। आप जानते थे कि दुनिया के दिखाई देने वाले साधन मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते। दुनिया की शक्तियाँ मुझे नष्ट नहीं कर सकतीं, क्योंकि आसमान पर एक अल्लाह है जो मुझे देख रहा है और जो इन सभी साधनों को पैदा करने वाला है। इसलिए साधनों का पैदा करने वाला अल्लाह है और उसके मुक़ाबले में साधन कुछ नहीं कर सकते।

आपका यह भरोसा व्यर्थ नहीं गया, बल्कि अल्लाह तआला ने इसे पूरा करके दिखाया। सुराक़ा, जो दो सौ ऊँटनियों के लालच में आया था, आपसे माफ़ी माँगकर वापस चला गया। अल्लाह तआला ने उसके दिल पर ऐसा डर डाल दिया कि उसने अपनी सलामती इसी में समझी कि चुपचाप वापस चला जाए। बल्कि उसने दूसरे पीछा करने वालों को भी वापस लौटा दिया। यह ऐसा भरोसा है जो किसी झूठे इंसान में नहीं हो सकता और न ही किसी धोखा देने वाले दिल में ठहर सकता है। यह ऐसा भरोसा है जिसकी दुनिया में कोई दूसरी मिसाल नहीं मिलती।**

हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के जीवन में भी एक अवसर पर इस तरह के भरोसे की मिसाल मिलती है, लेकिन वह मिसाल इससे बहुत कम दर्जे की है। क्योंकि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम के साथियों ने फ़िरऔनियों को देखकर कहा था:

इन्ना लमुदरकून

अर्थात् हम निश्चित रूप से पकड़ लिए जाएँगे। इस पर हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम ने उत्तर दिया था:

इन्ना मइया रब्बी सयहदीन (अश्शुअरा: 63)

अर्थात् निश्चय ही मेरा रब मेरे साथ है, वह मुझे रास्ता दिखाएगा। लेकिन

रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का भरोसा इतना पूर्ण था कि उसका प्रभाव आपके साथी पर भी पड़ा।

हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मूसा अलैहिस्सलाम के साथियों की तरह घबराकर यह नहीं कहा कि हम अवश्य पकड़ लिए जाएँगे। बल्कि गुफ़ा में बैठे हुए और यह देखते हुए भी कि दुश्मन ऊपर तक आ पहुँचे हैं, उन्होंने यह कहा कि यदि वे अपने पैरों के नीचे देखें तो हमें देख सकते हैं। यह ईमान उस प्रकाश का परिणाम था जो उस समय नबूवत का प्रकाश आपके दिल पर पड़ रहा था। दूसरे शब्दों में, यह नबूवत के प्रकाश का प्रभाव था।

(सीरतुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, अनवारुल उलूम, भाग 1, पृष्ठ 491 से 496)

इस प्रकार यह आपके अल्लाह तआला पर भरोसे की महान शान थी।

साधनों का प्रबंध करना, उनका उपयोग करना और फिर अल्लाह तआला पर भरोसा रखना, ये सभी आवश्यक बातें हैं।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के अल्लाह तआला पर भरोसे का ज़िक्र करते हुए इस बात को हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस तरह बयान किया है:

"जिस व्यक्ति को अल्लाह तआला के अस्तित्व पर विश्वास हो और फिर उसे यह भी विश्वास हो कि अल्लाह तआला ने उसे एक विशेष उद्देश्य के लिए पैदा किया है, वह काम करना कैसे छोड़ सकता है? वह तो सबसे अधिक काम करने वाला होता है।

मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सभी काम आपके ईमान के कारण थे। क्योंकि जो व्यक्ति यह समझता है कि एक अल्लाह है और उसने मुझे किसी विशेष उद्देश्य के लिए पैदा किया है, वह उस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए कोशिश भी करता है।

इसलिए देखो कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जहाँ अपने ईमान का प्रमाण देते हैं और जहाँ ग़ारे सौर में बैठे हुए हज़रत अबू बकर रज़ियल्लाहु अन्हु से कहते हैं कि अबू बक्र! घबराओ मत! अल्लाह हमारे साथ है और वही हमारी रक्षा करने वाला है, वहीं आप धर्म के दूसरे कामों में रात-दिन इस तरह व्यस्त रहते हैं कि ऐसा लगता है मानो सारी दुनिया के काम आपके ही सुपुर्द कर दिए गए हों।

इसलिए एक ओर यदि आपको यह विश्वास था कि अल्लाह मौजूद है और वह अपने बंदों की सहायता करता है, तो दूसरी ओर आप अल्लाह की परीक्षा लेते हुए दिखाई नहीं देते। आप ऐसा नहीं करते कि जब अल्लाह ने कह दिया है कि मैं तुम्हें जीत दूँगा तो हाथ पर हाथ रखकर बैठ जाएँ और कहें कि अब जीत के लिए कोशिश करने की क्या ज़रूरत है। अल्लाह अपने वादे के अनुसार स्वयं जीत दे देगा।

आप ऐसा नहीं करते, बल्कि जीत हासिल करने के लिए कोशिश भी करते हैं। चुनाँचे आप लोगों को युद्ध की कलाएँ सिखाते हैं, दुश्मन का मुक़ाबला करने के लिए सेना इकट्ठी करते हैं, सवारियों का प्रबंध करते हैं, हथियार जमा करते हैं और सैनिकों के खाने तथा रहने का प्रबंध करते हैं। फिर इन सभी तैयारियों को पूरा करने के बाद दुश्मन से लड़ने के लिए जाते हैं।

और जब ऐसा समय आता है कि दुश्मन की संख्या अधिक होती है और मुसलमानों की संख्या कम होती है, तो आप बड़े विश्वास और ईमान के साथ फ़रमाते हैं कि भले ही हम कम हैं, लेकिन जीत हमारी ही होगी। इसलिए

जहाँ तक इंसान के बस में उपाय करना संभव था, वहाँ तक आप सभी उपाय करते थे और फिर अल्लाह तआला पर भरोसा करते थे। इसलिए आपका ईमान अज्ञानता और आलस्य वाला ईमान नहीं था, बल्कि अनुभव और सच्चाई को देखकर प्राप्त होने वाला ईमान था। ऐसा ईमान उसी व्यक्ति का होता है जो एक ही समय में अल्लाह पर भरोसा भी करता है और काम भी करता है। दूसरे शब्दों में, वह काम और भरोसा, दोनों को साथ लेकर चलता है।"

(उसवए हसना, अनवारुल उलूम, भाग 17, पृष्ठ 97-98)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"मुसीबतों का वह समय, जो हमारे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर मक्का मुकर्रमा में तेरह वर्षों तक रहा, उस समय के हालात पढ़ने से यह बात बहुत स्पष्ट रूप से मालूम होती है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मुसीबत के समय एक सच्चे और नेक इंसान को जो अच्छे गुण दिखाने चाहिए, वे सभी गुण इस तरह दिखाए कि अल्लाह पर भरोसा रखना, घबराहट और बेचैनी से दूर रहना, अपने काम में सुस्ती न करना और किसी के डर से भयभीत न होना, इन सभी बातों का आपने ऐसा नमूना दिखाया कि आपके इस धैर्य और मज़बूती को देखकर काफ़िर भी ईमान ले आए और उन्होंने गवाही दी कि जब तक किसी का अल्लाह पर पूरा भरोसा न हो, वह इस तरह की मज़बूती और इस तरह दुखों को सहन नहीं कर सकता।"

(इस्लामी उसूल की फ़िलॉसफ़ी, रूहानी ख़ज़ाइन, भाग 10, पृष्ठ 447)

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अल्लाह तआला पर भरोसा रखते हुए साधनों को अपनाने का भी पूरा ध्यान रखा।

इस बारे में, जैसा कि मैंने कहा, बहुत-सी घटनाएँ मिलती हैं। चुनाँचे एक हदीस भी है। हज़रत उबय बिन कअब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है। उन्होंने बयान किया कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और आपके सहाबा मदीना पहुँचे और अंसार ने उन्हें अपने यहाँ शरण दी तो पूरा अरब उनके मुक़ाबले के लिए एक हो गया। मुसलमानों की हालत यह थी कि वे रात को भी हथियारों के बिना नहीं सोते थे और न ही सुबह करते थे। हर समय उनके पास हथियार रहते थे।

(अल-मुस्तदरक अलसहीहैन, भाग 2, पृष्ठ 435, किताबुत तफ़सीर, बाब तफ़सीरे सूरह अन्नूर, हदीस 3512, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बेरूत, 2002 ई.)

वे सोते और जागते हर समय अपने पास हथियार रखते थे। अल्लाह तआला पर भरोसा भी था और इस बात का भी ध्यान था कि किसी भी समय हमला हो सकता है। इसलिए हर समय चौकन्ना रहना और अपनी सुरक्षा का प्रबंध करना भी ज़रूरी था।

इसकी विस्तृत जानकारी हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा की एक दूसरी रिवायत से भी मिलती है। वे बयान करती हैं कि जब रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मदीना पहुँचे तो एक रात आप जागते रहे। फिर आपने फ़रमाया कि काश! मेरे सहाबा में से कोई नेक आदमी आज रात मेरी सुरक्षा करता।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि हम इसी हालत में थे कि अचानक हथियारों की खड़खड़ाहट सुनाई दी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कि कौन है? उत्तर मिला कि मैं साद बिन अबी वक़्क़ास हूँ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कि तुम्हें यहाँ आने की क्या वजह हुई? उन्होंने अर्ज़ किया कि मेरे दिल में आपकी सुरक्षा का ख़याल आया और मुझे चिंता हुई। इसलिए मैं आपकी पहरेदारी करने के लिए उपस्थित हुआ हूँ। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उनके लिए दुआ की। फिर आप आराम से सो गए।

एक और रिवायत में यही घटना बयान करते हुए हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा फ़रमाती हैं कि मैंने हथियारों की आवाज़ सुनी। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने पूछा कि कौन है? उन्होंने अर्ज़ किया कि साद और हुज़ैफ़ा हैं। ये दो व्यक्ति थे, जो आपकी पहरेदारी के लिए आए थे। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सो गए। यहाँ तक कि मैंने आपके तेज़ साँस लेने की आवाज़ सुनी। इसी दौरान यह आयत उतरी थी। अर्थात् उस समय आपके साँस लेने की आवाज़ तेज़ थी। आपकी ऐसी हालत उस समय होती थी जब आप पर वह्यी उतर रही होती थी।

हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा कहती हैं कि इसी दौरान यह आयत उतरी:

वल्लाहु यअसिमुका मिनन्नास।

अर्थात् अल्लाह तआला आपको इन लोगों से सुरक्षित रखेगा।

फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने अपने ख़ेमे से सिर बाहर निकाला और फ़रमाया कि ऐ लोगो! अब वापस चले जाओ। अल्लाह तआला ने मेरी सुरक्षा की ज़िम्मेदारी ले ली है।

(अल-जामिउ लिअहकामिल क़ुरआन, तफ़सीर क़ुर्तुबी, सूरह अल-मायदा, आयत 68 के अंतर्गत, पृष्ठ 1104, दार इब्न हज़्म)

जब तक आपको अल्लाह तआला की ओर से कोई पक्का विश्वास और कोई भविष्यवाणी नहीं मिली थी, तब तक आपने पहरा देने का प्रबंध किया। और जब अल्लाह तआला की ओर से सुरक्षा का भरोसा दिलाया गया तो आपने फ़रमाया कि अब तुम लोग वापस चले जाओ। अब अल्लाह तआला मेरी रक्षा करेगा।

जब रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने विभिन्न बादशाहों को धर्म का संदेश पहुँचाने के लिए पत्र भेजे तो फ़ारस के बादशाह किसरा ने बड़े घमंड से आपका पत्र टुकड़े-टुकड़े कर दिया। जब आपको इसकी जानकारी मिली तो अल्लाह तआला पर अपने पूर्ण भरोसे के कारण आपने फ़रमाया कि अल्लाह स्वयं इन लोगों को

टुकड़े-टुकड़े करे।

किसरा ने यमन के राज्यपाल के ज़रिए आपको पकड़ने के लिए दो सिपाहियों को पत्र देकर पहले ही भेज रखा था। आपने पत्र का विषय सुना, जिसमें लिखा था कि आप तुरंत अपने आपको इन लोगों के हवाले कर दें। इस ख़तरनाक अवसर पर आपने बिना किसी घबराहट के संदेश लाने वालों से फ़रमाया कि आज रात यहाँ ठहरो। कल तुम्हें जवाब दूँगा।

फिर अगली सुबह आपने उन प्रतिनिधियों से फ़रमाया कि तुम वापस चले जाओ और अपने मालिक अर्थात् यमन के राज्यपाल से जाकर कह दो कि मेरे रब ने आज रात तुम्हारे रब अर्थात् किसरा को मार दिया है। बादशाह ने यमन के राज्यपाल के ज़रिए ही यह संदेश भेजा था। जब उन लोगों ने यह बात सुनी तो वे हैरान रह गए और वापस चले गए।

बाद में मालूम हुआ कि उसी रात ख़ुसरो परवेज़ को उसके बेटे शीरवयह साइरस (Siroes) ने क़त्ल कर दिया था।

(सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, पृष्ठ 815-816 से लिया गया)

यह महान घटना अल्लाह तआला की चमत्कारिक सुरक्षा और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बेमिसाल भरोसे का प्रमाण है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पूरे विश्वास के साथ अल्लाह तआला के आदेश से युद्धों के लिए जाते थे तो निकलते समय दुआ भी किया करते थे।

इस बारे में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब किसी युद्ध के लिए निकलते तो यह दुआ पढ़ते थे:

अल्लाहुम्मा अंता अज़ुदी व अंता नसीरी व बिका उक़ातिल।

अर्थात् ऐ अल्लाह! तू ही मेरी शक्ति है और तू ही मेरा मददगार है और मैं तेरी सहायता से लड़ाई करता हूँ।

(सुन्नन तिर्मिज़ी, अबवाबुद दअवात, बाब फ़िद्दुआ इज़ा ग़ज़ा, हदीस 3584)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"मुसीबत के समय इंसान को बेचैनी तो होती है, लेकिन उसे चाहिए कि वह कभी भी अल्लाह पर भरोसा करना न छोड़े।

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को भी जंग-ए-बद्र के अवसर पर बहुत बेचैनी हुई थी। चुनाँचे आप दुआ करते थे:

या रब्बि इन् अहलकता हाज़िहिल इसाबता फ़लन तुअबदा फ़िल अर्ज़ि अबदा।

अर्थात् ऐ मेरे रब! यदि तूने इस जमात को नष्ट कर दिया तो फिर धरती पर कभी तेरी इबादत नहीं की जाएगी।

लेकिन आपकी यह बेचैनी केवल इंसानी स्वभाव के कारण थी, क्योंकि दूसरी ओर आपने अल्लाह पर भरोसा कभी नहीं छोड़ा था। आपकी नज़र आसमान की ओर थी और आपको पूरा विश्वास था कि अल्लाह तआला मुझे कभी नष्ट नहीं करेगा। आपने निराशा को अपने पास नहीं आने दिया था।

इस तरह की बेचैनी का पैदा होना इंसानी गुणों और दर्जों को पूरा करने के लिए ज़रूरी है, लेकिन इंसान को चाहिए कि निराशा को अपने पास न आने दे। क्योंकि निराशा काफ़िरों का गुण है। इंसान के मन में तरह-तरह के विचार पैदा होते हैं, जो उसे बेचैन करते हैं, लेकिन ईमान इन विचारों को दूर कर देता है। इंसान होने के कारण बेचैनी पैदा होती है और ईमान उसे दूर कर देता है।"**

(मलफ़ूज़ात, भाग 4, पृष्ठ 271-272, संस्करण 2022 ई.)

फिर अल्लाह तआला पर भरोसे की यह प्रसिद्ध घटना है कि एक दुश्मन ने आपको अकेला पाकर आप पर तलवार तान दी। लेकिन आपने बिना किसी घबराहट के फ़रमाया कि अल्लाह तआला मुझे तुमसे बचाएगा।

(सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए ज़ातुर्रिक़ा, हदीस 4135, अनुवादित भाग 8, पृष्ठ 293-294)

इस घटना को हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी अपने अंदाज़ में विस्तार से बयान किया है। आप फ़रमाते हैं:

"अल्लाह तआला पर भरोसे की यह हालत थी कि जब एक व्यक्ति ने आपको अकेला पाकर आप पर तलवार उठा ली और आपसे पूछा कि अब तुम्हें मुझसे कौन बचा सकता है? उस समय, जबकि आपके पास कोई हथियार नहीं था और लेटे हुए होने के कारण आप हिल भी नहीं सकते थे, आपने बड़े इत्मीनान और शांति से उत्तर दिया, 'अल्लाह'।

यह शब्द आपके मुँह से इतने विश्वास और दृढ़ता के साथ निकला कि वह काफ़िर भी आपके ईमान की ऊँचाई और आपके पूर्ण विश्वास को स्वीकार किए बिना न रह सका। उसके हाथ से तलवार गिर गई और जो व्यक्ति आपको क़त्ल करने आया था, वह आपके सामने अपराधियों की तरह खड़ा हो गया।"

(दीबाचए तफ़सीरुल क़ुरआन, अनवारुल उलूम, भाग 20, पृष्ठ 386)

जंग-ए-अहज़ाब में मुसलमानों के लिए बहुत कठिन दिन थे। मदीना में रहकर ही दुश्मन का मुक़ाबला करने का निर्णय किया गया था। यह किसी डर या अल्लाह तआला पर भरोसे की कमी के कारण नहीं था, बल्कि युद्ध की योजना के अनुसार ऐसा किया गया था। मदीना के चारों ओर एक खाई खोदी गई थी ताकि दुश्मन अचानक हमला न कर सके और मुसलमान इस खाई के कारण सुरक्षित रह सकें।

मुसलमानों की हालत यह थी कि उनमें से अधिकतर ग़रीब थे। बहुत-से लोग रोज़ कमाकर अपना खाना खाते थे। इसके बावजूद सभी ने मिलकर खाई खोदने में हिस्सा लिया ताकि दुश्मन के हमलों से सुरक्षित रहा जा सके। जो लोग उस दिन काम नहीं कर सकते थे, वे भूखे रहते थे।

उस समय पूरे अरब के बहुत-से क़बीले मिलकर मुसलमानों पर हमला करने आए थे। विभिन्न रिवायतों में उनकी संख्या अलग-अलग बताई गई है। बहरहाल, कम से कम दस हज़ार लोगों की संख्या बताई जाती है। कहीं पंद्रह हज़ार और कहीं चौबीस हज़ार का ज़िक्र मिलता है। वैसे दस हज़ार की संख्या भी मदीना की आबादी के हिसाब से हमलावरों की बहुत बड़ी संख्या थी। इस छोटे से शहर के लिए इतनी बड़ी सेना का सामना करना बहुत कठिन था।

(सीरत ख़ातमुन्नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम, हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु, एम.ए., पृष्ठ 574 से लिया गया)

बहरहाल, मुसलमान अपनी कठिन और ग़रीबी की हालत के बावजूद इस मुक़ाबले के लिए तैयार हो गए थे। उनकी संख्या कम थी, फिर भी वे इतनी बड़ी सेना का सामना करने के लिए तैयार थे। यह युद्ध की योजना थी कि संख्या कम होने के कारण शहर के अंदर रहकर दुश्मन का मुक़ाबला किया जाए। यह भी अल्लाह तआला का एक उपकार था। अल्लाह तआला ने पहले ही उन्हें ख़बरदार कर दिया था। मुसलमानों के ईमान में भी मज़बूती आ चुकी थी और

दुश्मनों की अधिक संख्या देखकर मुसलमान परेशान नहीं हुए, बल्कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के भरोसे ने मुसलमानों के भरोसे को उस समय और भी बढ़ा दिया था। विरोधियों और मुनाफ़िक़ों की बातें सुनने के बावजूद उनके हौसले कम नहीं हुए थे।

फिर देखिए कि मज़बूती और अल्लाह तआला पर भरोसे के परिणामस्वरूप अल्लाह तआला ने किस तरह व्यवस्था की। तेज़ आँधी और तूफ़ान ने काफ़िरों को भयभीत कर दिया और वे भाग गए। वे इस तरह बदहवासी में भागे कि अपना बहुत-सा खाने-पीने का सामान और दूसरी चीज़ें भी वहीं छोड़ गए, जो बाद में मुसलमानों के काम आईं। यह था अल्लाह तआला पर भरोसा करने का परिणाम।

जंग-ए-अहज़ाब में ही थोड़ा-सा खाना पूरी सेना के लिए काफ़ी हो जाने की घटना भी मिलती है। यह जहाँ एक चमत्कार है, वहीं अल्लाह तआला पर भरोसे की एक महान मिसाल भी है।

एक रिवायत में आता है कि हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह अंसारी रज़ियल्लाहु अन्हु ने बयान किया कि खाई खोदने के दिन अर्थात् जंग-ए-अहज़ाब के अवसर पर हम ज़मीन खोद रहे थे कि सामने एक बहुत सख़्त पत्थर आ गया। लोग नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आए और अर्ज़ किया कि खाई में एक पत्थर आ गया है। आपने फ़रमाया कि मैं नीचे उतरता हूँ। अर्थात् मैं स्वयं आता हूँ और इसे तोड़ता हूँ।

आप खड़े हुए तो आपके पेट पर एक पत्थर बँधा हुआ था। उस समय भूख के कारण लोग अपने पेट पर पत्थर बाँध लिया करते थे ताकि उन्हें कुछ सहारा मिल सके। हमारी हालत यह थी कि तीन दिन से हमने कुछ भी नहीं खाया था। इतनी सख़्त भूख थी।

नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने एक कुदाल ली और उससे उस पत्थर पर चोट लगाई। आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस पर इतनी चोटें लगाईं कि वह टूटकर बिखर गया और फिसलती हुई रेत का ढेर बन गया।

मैंने आपकी यह हालत देखी तो अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह! मुझे घर जाने की अनुमति दीजिए। फिर मैंने घर जाकर अपनी पत्नी से कहा कि मैंने नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की एक ऐसी हालत देखी है जिसे देखकर मुझसे रहा नहीं जा रहा। मैंने देखा है कि भूख के कारण आपने अपने पेट पर पत्थर बाँध रखा है। क्या तुम्हारे पास कुछ खाने को है?

मेरी पत्नी ने कहा कि कुछ जौ हैं और बकरी का एक छोटा बच्चा है। चुनाँचे मैंने उस बच्चे को ज़बह किया और मेरी पत्नी ने जौ पीस लिए। फिर हमने पत्थर की हाँडी में गोश्त डालकर पकाना शुरू कर दिया।

इसके बाद मैं नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया। उस समय तक

आटा गूँधा जा चुका था और उसमें ख़मीर भी उठ चुका था। हाँडी चूल्हे पर पकने के क़रीब थी। मैंने अर्ज़ किया कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम! मेरे पास थोड़ा-सा खाना है। आप उठिए और एक या दो व्यक्तियों को साथ ले लीजिए ताकि वे खाना खा लें।

आपने पूछा कि खाना कितना है? मैंने आपको सारी बात बता दी। इस पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि बहुत है। एक बकरी के बच्चे का गोश्त और थोड़े-से जौ हैं। कोई बात नहीं, यह बहुत खाना है। बहुत अच्छा है।

फिर आपने फ़रमाया कि अपनी पत्नी से कहो कि हाँडी चूल्हे से न उतारे और न ही रोटी को तंदूर से निकाले, जब तक कि मैं न आ जाऊँ।

इसके बाद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने सहाबा से कहा कि उठो! चुनाँचे मुहाजिर और अंसार सभी खड़े हो गए।

जब हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु अपनी पत्नी के पास पहुँचे तो पत्नी ने कहा कि तुम्हारा भला हो! नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम तो मुहाजिरों, अंसार और अपने साथियों को लेकर आ रहे हैं।

उनकी पत्नी ने पूछा कि क्या आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तुमसे खाने के बारे में कुछ पूछा था? मैंने कहा कि हाँ, पूछा था। फिर मैंने उसे सारी बात बता दी कि आपने खाने की मात्रा पूछी थी और मैंने आपको बता दिया था।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सहाबा को अपने साथ लेकर आए और फ़रमाया कि अंदर आ जाओ और जल्दी मत करो। अर्थात् जल्दबाज़ी करने की कोई ज़रूरत नहीं है। आराम से घर के अंदर आकर बैठ जाओ।

आप रोटियों के टुकड़े करते और उन पर गोश्त रखकर सहाबा को देने लगते। रोटी कपड़े से ढकी हुई थी। आप उसका एक टुकड़ा निकालते और उस पर थोड़ा-सा गोश्त और सालन रखकर सहाबा को दे देते। जब आप हाँडी या तंदूर से कुछ निकालते तो उसे फिर ढक देते।

आप इसी तरह करते रहे, यहाँ तक कि सभी सहाबा का पेट भर गया। सबने अच्छी तरह खाना खा लिया और इसके बावजूद कुछ खाना बच भी गया।

आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हज़रत जाबिर रज़ियल्लाहु अन्हु की पत्नी से फ़रमाया कि अब तुम भी यह खाना खा लो और कुछ खाना दूसरों के लिए भी भेज दो, क्योंकि लोग बहुत भूखे हैं।

(सहीह बुख़ारी, किताबुल मग़ाज़ी, बाब ग़ज़वए ख़ंदक़ व हियाल अहज़ाब, हदीस 4101, अनुवादित भाग 8, पृष्ठ 240-241)

यह अल्लाह तआला पर भरोसा भी था और साथ ही इसमें बरकत की दुआ भी थी, जिसके कारण खाने में बरकत पड़ गई।

फिर एक रिवायत में आता है कि एक व्यक्ति ने हज़रत बराअ बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हु से पूछा कि क्या तुम जंग-ए-हुनैन में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को छोड़कर भाग गए थे? उन्होंने कहा कि हाँ! लेकिन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मैदान नहीं छोड़ा था।

हवाज़िन के लोग तीर चलाने में माहिर थे। जब हमारा उनसे सामना हुआ तो हमने उन पर हमला किया और वे हार गए। इसके बाद मुसलमान युद्ध में प्राप्त माल इकट्ठा करने लगे, लेकिन उन्होंने सामने से तीर चलाना शुरू कर दिया।

रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम अपनी जगह से नहीं हटे। मैंने आपको देखा कि आप अपने सफ़ेद खच्चर पर सवार थे और अबू सुफ़ियान बिन हारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब उसकी लगाम पकड़े हुए थे। नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम यह शेर पढ़ रहे थे:

अना न्नबिय्यु ला कज़िब, अना इब्नु अब्दिल मुत्तलिब।

अर्थात् मैं अल्लाह का भेजा हुआ नबी हूँ और इसमें कोई झूठ नहीं है। मैं अब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूँ।

(सहीह बुख़ारी, किताबुल जिहाद वस्सियर, बाब मन क़ादा दाब्बत ग़ैरिही फ़िल हरब, हदीस 2864, अनुवादित भाग 5, पृष्ठ 226)

इस घटना का ज़िक्र हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी किया है और इसकी कुछ और जानकारी दी है। आप फ़रमाते हैं:

"आपका यह कहना कि मैं अब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूँ, इसका अर्थ यह था कि उस समय दुश्मन का हमला इतना ज़ोरदार था कि दुश्मन के चार हज़ार तीर चलाने वाले लोग तीरों की बारिश कर रहे थे। ऐसी हालत में मेरा आगे बढ़ना इंसान की हिम्मत और शान से बहुत ऊँची बात दिखाई देती है। मुझे कोई डर नहीं है।

इसलिए आपने यह शेर पढ़ा था ताकि कोई धोखा न खाए और यह न समझे कि मुझमें अल्लाह जैसी शक्तियाँ हैं। मैं तो केवल अब्दुल मुत्तलिब का बेटा हूँ और एक इंसान हूँ। केवल अल्लाह तआला की सहायता मेरे नबी होने के कारण मेरे साथ है।"

(ख़ौफ़ और उम्मीद का दरमियानी रास्ता, अनवारुल उलूम, भाग 19, पृष्ठ 47)

अल्लाह तआला पर भरोसे की यही शान है कि जब अल्लाह तआला ने मुझसे कामयाबी का वादा किया है तो इन तीरों की बारिश में भी वह मुझे कामयाब करेगा।

अल्लाह तआला पर भरोसे और उसके वादों पर विश्वास की एक और मिसाल इस तरह मिलती है। एक रिवायत में आता है। अब

शुरू की घटनाओं को देखें या आख़िरी घटनाओं को देखें, तो हमें हर जगह अल्लाह तआला पर एक जैसा भरोसा दिखाई देता है।

यह घटना जंग-ए-हुनैन की है और दूसरी घटना पहली जंग अर्थात् जंग-ए-बद्र की है।

मदीना में हबीब बिन यसाफ़ नाम का एक बहुत ताक़तवर और बहादुर व्यक्ति रहता था। उस समय मुसलमानों की हालत बहुत कमज़ोर थी। यह व्यक्ति ख़ज़राज क़बीले से संबंध रखता था और जंग-ए-बद्र तक मुसलमान नहीं हुआ था। इसके बावजूद वह अपनी क़ौम ख़ज़राज के साथ युद्ध के लिए रवाना हुआ। उसे यह उम्मीद भी थी कि यदि युद्ध में जीत हुई तो उसे युद्ध में प्राप्त माल में हिस्सा मिलेगा।

मुसलमानों को इस बात से बहुत ख़ुशी हुई कि यह व्यक्ति भी उनके साथ युद्ध में शामिल हो रहा है। लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उससे फ़रमाया कि हमारे साथ केवल वही व्यक्ति युद्ध में जाएगा जो हमारे धर्म को मानता हो।

एक दूसरी रिवायत में आता है कि आपने फ़रमाया कि तुम वापस चले जाओ। हम किसी मुशरिक की सहायता नहीं लेना चाहते।

हबीब बिन यसाफ़ दूसरी बार फिर रसूल करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास आया, लेकिन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने दूसरी बार भी उसे वापस भेज दिया।

आख़िरकार जब वह तीसरी बार आया तो आपने उससे पूछा कि क्या तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाते हो? उसने कहा कि हाँ। इसके बाद वह मुसलमान हो गया और उसने बहुत बहादुरी के साथ युद्ध में हिस्सा लिया।

(अस्सीरतुल हल्बिय्या, भाग 2, पृष्ठ 204, दारुल कुतुबिल इल्मिय्या, बेरूत, 2002 ई.)

इसलिए आपने इन विपरीत परिस्थितियों और बहुत अधिक आवश्यकता के बावजूद उस व्यक्ति से उसके काफ़िर रहते हुए सहायता नहीं ली। क्योंकि किसी दूसरे से सहायता लेना अल्लाह तआला के वादों और उन वादों पर विश्वास तथा भरोसे के विरुद्ध बात थी।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं:

"आजकल के समझदार लोगों के विचार में किसी को अपना दुश्मन बनाना ग़लती है। लेकिन सच्चाई से पूछो तो यह भी सच्चाई का एक प्रमाण है। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने किसी एक को भी नहीं छोड़ा। अर्थात् हर कोई आपका दुश्मन बन गया था। आपने सबको अपना विरोधी बना लिया।

इन लोगों के विचार में, अल्लाह की पनाह, आपने ग़लती की थी। जबकि केवल अल्लाह के लिए सबको अपना विरोधी बना लेना आपकी सच्चाई का स्पष्ट प्रमाण है। इससे आपकी ईमान की शक्ति का पता चलता है।

एक ओर मसीह अलैहिस्सलाम की मिसाल देखो। उनकी शिक्षा, जो इंजीलों में मिलती है, उससे मालूम होता है कि उनका स्वभाव किसी को नाराज़ करने वाला बिल्कुल नहीं था। यहूदियों से कहा गया कि मैं तौरात के एक छोटे-से शब्द को भी बदलने नहीं आया हूँ।

इसके विपरीत

यदि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा को देखा जाए तो धरती पर कोई भी ऐसा धर्म या क़ौम दिखाई नहीं देती, जिसे आपने इस्लाम का संदेश न दिया हो और जिसकी ग़लती को स्पष्ट न किया हो। और फिर हर एक के मुक़ाबले में अपनी जीत और कामयाबी का दावा भी किया हो।

यह दावा किसी व्यक्तिगत शक्ति के कारण नहीं था, बल्कि इसलिए था कि आपको अल्लाह तआला पर पूरा विश्वास और भरोसा था। आपको विश्वास था कि इंशाअल्लाह मुझे कामयाबी मिलेगी, क्योंकि मैं अल्लाह तआला की ओर से आया हूँ।

आप फ़रमाते हैं:

"भला बताओ कि जब तक अल्लाह पर पूरा भरोसा और विश्वास न हो, कोई व्यक्ति इस तरह का काम कैसे कर सकता है?"

(मलफ़ूज़ात, भाग 7, पृष्ठ 39, संस्करण 2022 ई.)

अल्लाहुम्मा सल्लि अला मुहम्मदिं व अला आलि मुहम्मदिं व बारिक व सल्लिम इन्नका हमीदुम मजीद।

★ ★ ★

हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का ऑस्ट्रेलिया दौरा 2013

(भाग -8)

रोटोरुआ शहर और इसके आसपास का क्षेत्र बहुत सुंदर और मनमोहक है। यह इलाका हरे-भरे पहाड़ों और कई सुंदर झीलों के बीच बसा हुआ है। इसी क्षेत्र में एक ओर गंधक के गर्म पानी के उबलते हुए झरने हैं और उनसे कुछ दूरी पर माओरी कबीले के लोगों का एक गाँव है। इस गाँव में माओरी लोग अपनी संस्कृति और रीति-रिवाजों के साथ उसी तरह जीवन बिता रहे हैं, जैसे आज से एक शताब्दी पहले बिताया करते थे। उनके घर और रहन-सहन को देखकर ऐसा लगता है, जैसे इंसान कई शताब्दियों पीछे पहुँच गया हो।

छह बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान से बाहर तशरीफ़ लाए और तय कार्यक्रम के अनुसार इस क्षेत्र की सैर के लिए रवाना हुए। सबसे पहले हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला उस स्थान पर तशरीफ़ ले गए, जहाँ गंधक के गर्म पानी के झरने उबल रहे थे। गंधक का बहुत गर्म पानी फव्वारों के रूप में पहाड़ी के अलग-अलग हिस्सों से बाहर निकल रहा था। मार्गदर्शक ने बताया कि ये झरने लगभग 20 हजार वर्षों से मौजूद हैं। इनसे फव्वारों के रूप में बहुत तेज़ दबाव के साथ निकलने वाला गंधक का पानी 30 मीटर की ऊँचाई तक पहुँचता है। कभी-कभी यह पानी कुछ समय के लिए निकलना बंद भी हो जाता है। लेकिन एक ही वर्ष में 300 दिन ऐसे भी आए, जब यह लगातार निकलता रहा। अन्यथा कुछ समय तक निकलने के बाद कुछ दिनों के लिए बंद हो जाता है। जहाँ ये झरने उबल रहे हैं, वहाँ पहाड़ी और उसके आसपास की चट्टानों में अलग-अलग स्थानों पर छेद बने हुए हैं, जिनसे लगातार धुआँ निकलता रहता है। इस प्रकार एक ओर उबलता हुआ पानी अलग-अलग स्थानों से 30 मीटर तक ऊँचा उठ रहा है, तो दूसरी ओर सैकड़ों छेदों से लगातार धुआँ निकल रहा है। ऐसा लगता है, जैसे यह पूरा क्षेत्र आग से तप रहा हो।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने मार्गदर्शक से विभिन्न बातों के बारे में जानकारी प्राप्त की और साथ-साथ इन स्थानों के चित्र और चलचित्र भी बनाए। इसी पहाड़ी के आसपास की जमीन पर दलदल जैसी जगहों में कई तालाब बने हुए हैं, जिन्हें उबलती हुई मिट्टी के तालाब कहा जाता है। इन तालाबों में भी गंधक और अलग-अलग प्रकार के लवण मिले हुए पानी से लगातार बुलबुले उठते रहते हैं और पानी उबलता रहता है।

यहाँ की सैर के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ यहाँ से साढ़े सात किलोमीटर की दूरी पर स्थित रोटोरुआ झील पर तशरीफ़ ले आए। यह इस क्षेत्र की 16 झीलों में सबसे बड़ी झील है। इसके तीन ओर हरे-भरे पहाड़ों की एक श्रृंखला है, जबकि एक ओर मैदानी इलाका है, जहाँ से लोग इस झील का सुंदर दृश्य देखते हैं। झील की सैर कराने के लिए छोटी नावें और जहाज़ भी चलते हैं। इस क्षेत्र में कुल 16 झीलें हैं और ये सभी ज्वालामुखी की बहुत बड़ी प्राकृतिक हलचल के कारण बनी हैं। इस झील के किनारे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए तशरीफ़ फ़रमा रहे और वहाँ के सुंदर प्राकृतिक दृश्यों के चित्र और चलचित्र भी बनाए। यहाँ ठहरने के दौरान कॉफी और चाय आदि का भी प्रबंध किया गया था।

इस झील की सैर के बाद साढ़े सात बजे होटल रिड्जेस वापसी हुई।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ तय कार्यक्रम के अनुसार साढ़े नौ बजे होटल के एक सभागार में तशरीफ़ लाए और मग़रिब तथा इशा की नमाज़ें मिलाकर पढ़ाईं। नमाज़ें अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

...★★★...

आज माओरी केंद्र मारे में स्वागत समारोह का सीधा प्रसारण एक माओरी रेडियो ने किया। इसी प्रकार न्यूज़ीलैंड के राष्ट्रीय रेडियो और राष्ट्रीय माओरी दूरदर्शन ने भी अपनी समाचारों में आज के इस समारोह का विशेष रूप से उल्लेख किया।

हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फ़रमाया था:

"खुदा तआला ने मुझे बार-बार खबर दी है कि वह मुझे बहुत महानता देगा और लोगों के दिलों में मेरी मुहब्बत पैदा करेगा और मेरे सिलसिले को सारी दुनिया में फैलाएगा और सभी फिरकों पर मेरे फिरके को जीत देगा। ...हर एक क़ौम इस चश्मे से पानी पिएगी और यह सिलसिला बड़ी तेजी से बढ़ेगा और फूलेगा। यहाँ तक कि धरती पर फैल जाएगा।"

(तजल्लीआते इलाहिया, रूहानी ख़ज़ायन, जिल्द 20, पृष्ठ 409)

फिर आप एक अन्य स्थान पर फ़रमाते हैं:

"इस सिलसिले की पहली नींव खुदा तआला ने अपने हाथ से रखी है और इसके लिए ऐसी क़ौमें तैयार की हैं, जो बहुत जल्द इसमें शामिल हो जाएँगी। क्योंकि यह उस शक्तिशाली खुदा का काम है, जिसके सामने कोई बात अनहोनी नहीं है।"

(मजमूआ इश्तिहारात, जिल्द प्रथम, इश्तिहार नंबर 91, पृष्ठ 281-282)

आज न्यूज़ीलैंड की धरती पर रहने वाली एक प्राचीन माओरी क़ौम ने जिस तरह अपने केंद्र मारे में हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का पूरे जोश, अत्यंत प्रेम और सम्मान तथा दिल की गहराइयों से स्वागत किया है और अपने केंद्र में अपने हाथों से लिवाए अहमदियत लहराया है, यह इस बात का प्रमाण है कि आज यह क़ौम भी हज़रत अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के चश्मे से पानी पीकर तृप्त हुई है। इंशाअल्लाह तआला एक दिन यह क़ौम भी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सिलसिले में शामिल हो जाएगी, क्योंकि यह उस शक्तिशाली खुदा का काम है, जिसके सामने कोई बात अनहोनी नहीं है।

अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इसी वर्ष इस क़ौम के एक व्यक्ति को पहली बैअत करने की भी तौफ़ीक़ मिली है। अब इंशाअल्लाह अज़ीज़ यह एक बैअत सैकड़ों और फिर हज़ारों बैअतों में बदल जाएगी। अल्लाह करे कि ऐसा जल्द हो और ये सुंदर दृश्य हम अपनी आँखों से देखें। आमीन।

30 अक्टूबर, बुधवार 2013 ई.

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ होटल के एक ऐसे सभागार में तशरीफ़ लाए, जिसे नमाज़ पढ़ने के लिए विशेष रूप से तैयार किया गया था और फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कार्यालय की डाक देखी और विभिन्न पत्रों तथा रिपोर्टों पर आवश्यक निर्देश दिए।

आज के कार्यक्रम के अनुसार रोटोरुआ क्षेत्र से वापस हैमिल्टन और फिर वहाँ से ऑकलैंड के लिए रवाना होना था। रोटोरुआ से हैमिल्टन की दूरी 106 किलोमीटर है। ग्यारह बजकर दस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ होटल से बाहर तशरीफ़ लाए और हैमिल्टन के लिए रवाना हुए।

हैमिल्टन के बाग़

हैमिल्टन शहर न्यूज़ीलैंड के बड़े शहरों में से एक है। यहाँ बहुत बड़े क्षेत्र में हैमिल्टन गार्डन नाम से एक बाग़ बनाया गया है। इस बाग़ की विशेषता यह है कि दुनिया के अलग-अलग देशों से फूलों के पौधे लाकर यहाँ लगाए गए हैं। इस बाग़ को दो अलग-अलग तरीकों से तैयार किया गया है। उदाहरण के तौर पर, एक बड़े हिस्से को केवल गुलाब के पौधों के लिए रखा गया है। ये पौधे दुनिया के अलग-अलग देशों से लाए गए हैं। अलग-अलग रंगों के गुलाबों से यह पूरा हिस्सा सजा हुआ है और इसका नाम रोजर्स रोज़ गार्डन है।

इसके अलावा दुनिया के अलग-अलग देशों के नाम से अलग-अलग बाग़ भी तैयार किए गए हैं। जैसे चीनी बाग़, अंग्रेज़ी फूलों का बाग़, जापानी बाग़, इतालवी बाग़ और भारतीय चारबाग़ आदि बनाए गए हैं। इनमें से हर एक बाग़ में बहुत सुंदर ढंग और सही क्रम से फूल लगाए गए हैं। साथ ही तालाब और फव्वारे भी बनाए गए हैं। इसी प्रकार यहाँ रसोई का बाग़, जड़ी-बूटियों का बाग़ और अलग-अलग नामों तथा प्रकारों के कई अन्य बाग़ भी मौजूद हैं।

लगभग एक घंटा पच्चीस मिनट के सफ़र के बाद हैमिल्टन गार्डन पहुँचे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस बाग़ के अलग-अलग हिस्से देखे और उनके चित्र भी बनाए। लगभग पचास मिनट तक इस बाग़ की सैर फ़रमाई।

इसके बाद यहाँ से एक बजकर पच्चीस मिनट पर ऑकलैंड के लिए रवाना हुए। लगभग एक घंटा पैंतीस मिनट के सफ़र के बाद दोपहर तीन बजे होटल क्रेस्ट पहुँचे और हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

पाँच बजकर चालीस मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान होटल क्रेस्ट से रवाना होकर छह बजे मस्जिद बैतुल मुक़ीत पहुँचे और ज़ुहर तथा अस्र की नमाज़ें मिलाकर पढ़ाईं।

व्यक्तिगत एवं पारिवारिक मुलाक़ातें

नमाज़ अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय में तशरीफ़ ले गए, जहाँ तय कार्यक्रम के अनुसार सवा छह बजे पारिवारिक मुलाक़ातें शुरू हुईं।

आज शाम के इस कार्यक्रम में कुल 58 परिवारों के 393 लोगों ने अपने प्यारे आका से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया। इन मुलाक़ात करने वालों का संबंध न्यूज़ीलैंड की जमाअतों ऑकलैंड, हैमिल्टन, वेलिंगटन, टॉरंगा और व्हांगारेई से था। इसके अतिरिक्त फ़िजी द्वीप समूह, पाकिस्तान, श्रीलंका और बांग्लादेश से आए कुछ परिवारों ने भी अपने प्यारे आका से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त किया।

हर एक ने हुज़ूर अनवर के साथ तस्वीर खिंचवाने का सौभाग्य प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों को कलम प्रदान किए और छोटी आयु के बच्चों को चॉकलेट प्रदान कीं।

मुलाक़ातों का यह कार्यक्रम साढ़े नौ बजे तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद बैतुल मुक़ीत में तशरीफ़ लाए और मग़रिब तथा इशा की नमाज़ें मिलाकर पढ़ाईं। नमाज़ें अदा करने के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान पर तशरीफ़ ले गए।

हुज़ूर अनवर का रेडियो पर साक्षात्कार

ऑस्ट्रेलिया के एक सरकारी रेडियो केंद्र एसबीएस के प्रतिनिधि ने 19 अक्टूबर, शनिवार 2013 को मस्जिद बैतुल हुदा, सिडनी आकर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का जो साक्षात्कार लिया था, उसे आज 30 अक्टूबर को इस रेडियो केंद्र ने प्रसारित किया। इस साक्षात्कार का प्रसारण दस मिनट तक जारी रहा। यह रेडियो केंद्र दुनिया की 74 अलग-अलग भाषाओं में कार्यक्रम प्रसारित करता है और पूरे ऑस्ट्रेलिया में सुना जाता है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का एसबीएस रेडियो पर प्रसारित किया गया निम्नलिखित साक्षात्कार उर्दू भाषा में था। कार्यक्रम के संचालक ने कार्यक्रम के आरंभ में परिचय देते हुए कहा:

हम अपने कार्यक्रम में अक्सर अल्पसंख्यक समुदायों के नेताओं और ऑस्ट्रेलिया आने वाली अन्य महत्वपूर्ण हस्तियों के विचार और दृष्टिकोण आप तक पहुँचाते हैं। पाकिस्तान में अल्पसंख्यक घोषित की गई अहमदिया जमाअत के धार्मिक और प्रशासनिक प्रमुख मिर्ज़ा मसरूर अहमद ऑस्ट्रेलिया के दौरे पर आए हैं और उन्होंने सिडनी में होने वाले अहमदिया जमाअत के वार्षिक सम्मेलन में भाग लिया है। इस समय हम आपको सिडनी में हुई बातचीत सुना रहे हैं। एसबीएस के लिए इन विचारों से सहमत होना आवश्यक नहीं है, लेकिन हमें आशा है कि हमारे सुनने वाले दूसरों की राय का भी उसी प्रकार सम्मान करेंगे, जिस प्रकार वे अपनी राय से असहमत लोगों से सम्मान की अपेक्षा रखते हैं।

इसके बाद निम्नलिखित पहले से दर्ज किया गया साक्षात्कार प्रसारित किया गया।

साक्षात्कार के आरंभ में संचालक ने कहा: इस समय हम मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहब के साथ मौजूद हैं, जो अहमदिया जमाअत के धार्मिक और प्रशासनिक प्रमुख भी हैं। कार्यक्रम में आपका स्वागत है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: जज़ाकल्लाह। धन्यवाद।

इसके बाद संचालक ने कहा कि जनाब मिर्ज़ा साहब! मैं बातचीत की शुरुआत अहमदिया जमाअत के इतिहास से करना चाहूँगा। अहमदिया जमाअत की स्थापना कब हुई, कैसे हुई और इस आंदोलन की शुरुआत किस प्रकार हुई?

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: अहमदिया जमाअत का इतिहास जानने के लिए आपको चौदह सौ वर्ष पीछे जाना पड़ेगा, जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने यह भविष्यवाणी फ़रमाई थी कि एक ऐसा समय आएगा जब मुसलमान व्यावहारिक रूप से अपनी शिक्षा को भूल चुके होंगे। क़ुरआन करीम तो मौजूद होगा, लेकिन उस पर अमल नहीं होगा और वह अंधकार का समय होगा। बहरहाल, संक्षेप में यह कि चौदहवीं शताब्दी में एक व्यक्ति आएगा, जो मुझमें से ही होगा और मेरी शिक्षा को, वास्तविक शिक्षा को और क़ुरआन करीम की शिक्षा को आगे बढ़ाएगा और वह मसीह तथा महदी होगा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: हम यह विश्वास करते हैं और ईमान रखते हैं कि आने वाला वह व्यक्ति उन सभी निशानियों के साथ आया, जिनका वर्णन आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था। उन्होंने 1889 ईस्वी में यह घोषणा की, जमाअत की स्थापना की और पहली बैअत ली। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जिन बहुत-सी निशानियों का वर्णन फ़रमाया था, उनमें से एक निशानी ऐसी भी है जिसे हम आसमानी निशानी कह सकते हैं। आपने रमज़ान के महीने में कुछ निश्चित तारीख़ों पर सूरज और चाँद को ग्रहण लगने की भविष्यवाणी फ़रमाई थी। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से 1894 ईस्वी में पूर्वी गोलार्ध में और 1895 ईस्वी में पश्चिमी गोलार्ध में उन्हीं निश्चित तारीख़ों पर ये ग्रहण लगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: हम यह विश्वास रखते हैं कि आने वाले वह मसीह और महदी, जिनकी भविष्यवाणी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाई थी, हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहब क़ादियानी ही हैं, क्योंकि निशानियाँ भी पूरी हो रही हैं और इसी उद्देश्य के लिए आपने जमाअत की स्थापना की थी।

इसके बाद साक्षात्कार लेने वाले पत्रकार ने प्रश्न किया कि हज़रत मसीह मौऊद के देहांत के बाद क्या तरीका अपनाया गया, क्योंकि उनका तो मसीह होने का दावा था। इसके बाद ख़िलाफ़त का सिलसिला कैसे शुरू हुआ? जमाअत में ख़लीफ़ा के चुनाव के लिए क्या तरीका अपनाया जाता है?

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के 1908 ईस्वी में विसाल के बाद ख़िलाफ़त का सिलसिला जारी हुआ और उस समय मौजूद लोगों ने ख़िलाफ़त के लिए अपने ख़लीफ़ा का चुनाव किया, जो हज़रत मौलाना नूरुद्दीन साहब थे। वे उस समय के बहुत बड़े माने हुए विद्वान थे। उनकी वफ़ात के बाद फिर 1914 ईस्वी में दूसरी ख़िलाफ़त का चुनाव हुआ। उस समय जमाअत में थोड़ी-सी फूट पड़ी, लेकिन जमाअत के अधिकतर लोग हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद साहब की बैअत में आ गए। इसके बाद जो लोग अलग हो गए थे, उनमें से भी बहुत-से लोग बैअत में शामिल हो गए और जमाअत तरक़्क़ी करती चली गई। जब हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहब क़ादियानी की वफ़ात हुई, उस समय जमाअत की संख्या चार लाख या उससे कुछ अधिक थी। वह जमाअत तरक़्क़ी करते-करते आज दुनिया के 204 देशों में पहुँच गई है और इसके सदस्यों की संख्या करोड़ों में है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: ख़िलाफ़त के चुनाव के लिए इसके बाद बाक़ायदा नियम बनाए गए। एक चुनाव मंडल है और ख़िलाफ़त के चुनाव के लिए एक चुनी हुई समिति है, जो ख़लीफ़ा का चुनाव करती है। 1982 ईस्वी में तीसरे ख़लीफ़ा, हज़रत मिर्ज़ा नासिर अहमद साहब की वफ़ात हुई तो रब्वा, पंजाब में चौथे ख़लीफ़ा, हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह राबे का चुनाव हुआ। लेकिन इसके बाद 1984 ईस्वी के क़ानूनों के तहत जब ज़िया-उल-हक़ ने बहुत कड़े क़ानून बना दिए, तो हमें अस्सलामो अलैकुम कहने की अनुमति नहीं थी। हमें नमाज़ पढ़ने की अनुमति नहीं थी। ऐसा कोई भी काम, जिससे इस्लामी मान्यताओं का प्रकट होना हो, हम नहीं कर सकते थे। इसलिए ख़लीफ़ा और जमाअत के प्रमुख के रूप में ख़लीफ़तुल मसीह राबे, हज़रत मिर्ज़ा ताहिर अहमद साहब को पाकिस्तान से लंदन जाना पड़ा और वे 1984 ईस्वी से वहीं रहे। 2003 ईस्वी में उनकी वफ़ात हुई। चूँकि पाकिस्तान में हालात उसी प्रकार बने हुए थे, इसलिए जब पाँचवीं ख़िलाफ़त का चुनाव हुआ तो वह लंदन की सबसे पुरानी मस्जिद, मस्जिद फ़ज़ल में हुआ। वहाँ 22 अप्रैल 2003 को मुझे ख़लीफ़ा चुना गया।

इसके बाद कार्यक्रम के संचालक पत्रकार ने प्रश्न किया कि जो (हज़रत मिर्ज़ा) ग़ुलाम अहमद क़ादियानी साहब थे, उन्होंने एक नए नबी होने का दावा किया था। इस बारे में कुछ विस्तार से समझाइए।

इस प्रश्न के उत्तर में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया: बात यह है कि ये सारी भविष्यवाणियाँ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के समय से ही थीं। जैसा कि मैंने कहा कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातमुन नबिय्यीन थे। आम मुसलमानों में यह धारणा बनी हुई है और उस समय भी यही धारणा थी कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम जीवित आसमान पर बैठे हैं और वे धरती पर आएँगे। यह बात भी मुसलमानों में प्रचलित है कि महदी अलैहिस्सलाम का भी प्रकट होना होगा। आम मुसलमान यह समझते हैं कि मसीह और महदी दो अलग-अलग व्यक्ति होंगे। मसीह आसमान से उतरेंगे और महदी उम्मत में से प्रकट होंगे। फिर दोनों मिलकर सुधार भी करेंगे, इस्लाम का प्रचार भी करेंगे और तलवार भी चलाएँगे।

आम मुसलमान भी यह कहते हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आसमान से उतरेंगे। जब वे आएँगे तो उसी पद के साथ आएँगे। ऐसा नहीं हो सकता कि अल्लाह तआला ने पहले किसी व्यक्ति को ऊँचा स्थान दिया हो और बाद में उससे छीन लिया जाए। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया था कि मसीह मौऊद जो आएगा, वह मेरी उम्मत में से ही होगा। आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया कि उसका आना मेरा आना होगा। अर्थात वह मेरे तरीके पर चलने वाला होगा और उन अधिकारों के साथ आएगा, जो अल्लाह तआला ने मुझे प्रदान किए हैं, क्योंकि वह मेरा अनुसरण करेगा। हम यह मानते हैं कि हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी अलैहिस्सलाम उस भविष्यवाणी के अनुसार आए, जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भी है और सूरह जुमुआ के अनुसार क़ुरआन करीम की भी। वे कोई नया धर्म-विधान लेकर नहीं आए, बल्कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की सुन्नत को फिर से स्थापित करने के लिए आए हैं। शेष ..

हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पवित्र जीवन

(हज़रत मिर्ज़ा बशीरुद्दीन महमूद अहमद[रज़ि.] जमाअत अहमदिया के द्वितीय ख़लीफ़ा)

बनू क़ुरैज़ा के अपने नियुक्त किए गए मध्यस्थ सअद[रज़ि.] का निर्णय तौरात के अनुकूल था

ये उपरोक्त घटनाएं व्यक्तिगत प्रकार की थीं। बनू क़ुरैज़ा जाति की हैसियत से अपनी हठ पर बने रहे तथा मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के आदेशों का इन्कार करते हुए सअद[रज़ि.] के निर्णय का आग्रह किया। मुहम्मद (स.अ.व.) ने भी उन की इस माँग को स्वीकार कर लिया। सअद[रज़ि.] को जो युद्ध में घायल हो चुके थे सूचना दी कि बनू क़ुरैज़ा तुम्हारा निर्णय स्वीकार करते हैं, आकर निर्णय करो। इस प्रस्ताव की घोषणा होते ही औस क़बीले के लोग जो बनू क़ुरैज़ा के काफ़ी समय से मित्र चले आए थे, सअद के पास दौड़ कर गए और आग्रह किया कि चूंकि 'ख़ज़रज' ने अपने मित्र यहूदियों को हमेशा दण्ड से बचाया है; आज तुम भी अपने मित्र क़बीले के पक्ष में निर्णय देना। सअद[रज़ि.] घावों के कारण बनू क़ुरैज़ा की ओर सवारी द्वारा गए। उनकी जाति के लोग उनके दाएँ-बाएँ दौड़ते जाते थे और सअद[रज़ि.] से आग्रह करते जाते थे कि देखना बनू क़ुरैज़ा के विरुद्ध फैसला न देना परन्तु सअद[रज़ि.] ने केवल यही उत्तर दिया कि किसी मामले का निर्णय जिस व्यक्ति के सुपुर्द किया जाता है वह अमानतदार होता है, उसे ईमानदारी से फैसला करना चाहिए। मैं ईमानदारी से फ़ैसला करूँगा। जब सअद[रज़ि.] यहूद के क़िले के पास पहुँचे जहाँ एक ओर बनू क़ुरैज़ा क़िले की दीवार के साथ खड़े सअद[रज़ि.] की प्रतीक्षा कर रहे थे तथा दूसरी ओर मुसलमान बैठे थे। अतः सअद[रज़ि.] ने पहले अपनी जाति से पूछा क्या आप लोग वादा करते हैं कि मैं जो निर्णय करूँ उसे आप लोग स्वीकार करेंगे? उन्होंने कहा हाँ, फिर सअद ने बनू क़ुरैज़ा को सम्बोधित करते हुए कहा कि क्या आप लोग वादा करते हैं कि मैं जो निर्णय करूँगा वह आप लोग स्वीकार करेंगे? फिर लज्जाभाव से दृष्टि को नीचे रखते हुए; उस ओर संकेत किया जिस ओर मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) विराजमान थे, कहा इधर बैठे हुए लोग भी यह वादा करते हैं ? रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने फ़रमाया हाँ। तत्पश्चात् सअद[रज़ि.] ने बाइबल के आदेशानुसार निर्णय सुनाया[1]। बाइबल में लिखा है

> "और जब तू किसी शहर के पास उससे लड़ने के लिए आ पहुँचे तो प्रथम उस से संधि का सन्देश कर। तब यों होगा कि यदि वह तुझे उत्तर दे कि संधि स्वीकार तथा तेरे लिए द्वार खोल दे तो समस्त प्रजा जो उस शहर में पाई जाए तुझे सुरक्षा कर देने वाली होगी तथा तेरी सेवा करेगी और यदि वह तुझ से संधि न करे अपितु तुझ से युद्ध करे तो तू उस की घेराबन्दी कर, तथा जब ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा उसे तेरे अधिकार में कर दे तो वहाँ के प्रत्येक पुरुष का तलवार की धार से वध कर परन्तु स्त्रियों और बच्चों तथा पशुओं को और जो कुछ उस शहर में हो उस की लूट का सारा धन अपने लिए ले और तू अपने शत्रुओं की इस लूट को जो ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने तुझे दी है, खा। इसी प्रकार तू उन सब शहरों से जो तुझ से बहुत दूर हैं तथा उन जातियों के शहरों में से नहीं हैं यही हाल करना परन्तु उन जातियों के शहरों में जिन्हें ख़ुदावन्द तेरा ख़ुदा तेरी पैतृक सम्पत्ति कर देता है, किसी वस्तु को जो साँस लेती है जीवित न छोड़ना अपितु तू उन्हें नष्ट करना। हित्ती, अमूरी, किन्आनी, फ़रज़्ज़ी, जव्वी और बयूसी को जैसा कि ख़ुदावन्द तेरे ख़ुदा ने तुझे आदेश दिया है ताकि वे अपने समस्त घृणित कार्यों के अनुसार जो उन्होंने अपने उपास्यों से किए तुम्हें अमल करना न सिखाएं और तुम ख़ुदावन्द अपने ख़ुदा के पापी हो जाओ-।"('इस्तिस्ना' अध्याय-20, आयत-10 से 18)

बाइबल के इस फैसले से स्पष्ट है कि यदि यहूदी विजयी हो जाते और मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) पराजित हो जाते तो बाइबल के इस निर्णय के अनुसार प्रथम तो समस्त मुसलमानों का वध कर दिया जाता, पुरुषों का भी, स्त्रियों तथा बच्चों का भी और जैसा कि इतिहास से सिद्ध है कि यहूदियों का यही इरादा था कि पुरुषों, स्त्रियों तथा बच्चों सबका तुरन्त वध कर दिया जाए परन्तु यदि वे उन से बड़ी से बड़ी नर्मी करते तब भी किताब इस्तिस्ना के उपरोक्त निर्णय के अनुसार वे उन से दूर के देशों वाली जातियों का सा व्यवहार करते और समस्त पुरुषों का वध कर देते; स्त्रियों, बच्चों तथा सामानों को लूट लेते। सअद[रज़ि.] ने जो बनू क़ुरैज़ा के वचन बद्ध सहयोगी तथा उनके मित्रों में से थे जब देखा कि यहूद ने इस्लामी शरीअत के अनुसार जो निश्चय ही उनके प्राणों की सुरक्षा करती, मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के निर्णय को स्वीकार नहीं किया। अतः उन्होंने वही निर्णय यहूद के बारे में किया जो मूसा[अ.] ने इस्तिस्ना में पहले से ऐसे अवसरों और परिस्थितियों के लिए कह छोड़ा था। इस फ़ैसले का उत्तरदायित्त्व मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) पर अथवा मुसलमानों पर नहीं, अपितु मूसा[अ.], तौरात तथा यहूदियों पर है जिन्होंने अन्य जातियों के साथ हज़ारों वर्ष इस प्रकार का आचरण जारी रखा था और जिनको मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की दया का पात्र बनने के लिए बुलाया गया तो उन्होंने इनकार कर दिया तथा कहा हम मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की बात मानने के लिए तैयार नहीं। हम सअद[रज़ि.] की बात मानेंगे। जब सअद[रज़ि.] ने मूसा[अ.] के फ़ैसले के अनुसार फ़ैसला दिया तो आज ईसाई संसार शोर मचाता है कि मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने अन्याय किया। क्या ईसाई लेखक इस बात को नहीं देखते कि मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने किसी दूसरे अवसर पर क्यों अन्याय न किया। शत्रु ने सैकड़ों बार स्वयं को मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) की दया पर छोड़ा तथा आप[स.] ने हर बार उन्हें क्षमा कर दिया। यह एक ही अवसर है कि शत्रु ने आग्रह किया कि हम रसूलुल्लाह (स.अ.व.) के फ़ैसले को नहीं मानेंगे अपितु अमुक अन्य व्यक्ति के फ़ैसले को मानेंगे और उस व्यक्ति ने मुहम्मद रसूलुल्लाह से फ़ैसले से पूर्व इक़रार ले लिया कि मैं जो निर्णय करूँगा उसे आप स्वीकार करेंगे। तत्पश्चात् उसने निर्णय किया अपितु उसने फैसला नहीं किया, उसने मूसा[अ.] का फैसला दुहरा दिया, जिसकी उम्मत में से होने का यहुदियों का दावा था। अतः यदि किसी ने अन्याय किया तो वह यहूद ने अपने प्राणों पर किया जिन्होंने मुहम्मद (स.अ.व.) का निर्णय स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। यदि किसी ने अन्याय किया तो मूसा[अ.] ने किया, जिन्होंने घेरे में लिए शत्रु के संबंध में ख़ुदा से आदेश पाकर तौरात में यही शिक्षा दी थी। यदि यह अन्याय था तो इन ईसाई लेखकों का कर्त्तव्य है कि मूसा अलैहिस्सलाम को अन्यायी या अत्याचारी ठहराएं अपितु मूसा[अ.] के ख़ुदा को अत्याचारी ठहराएं जिसने तौरात में यह शिक्षा दी।

अहज़ाब युद्ध की समाप्ति के पश्चात् रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फ़रमाया आज से मुश्रिक (द्वैतवादी) हम पर आक्रमण नहीं करेंगे, अब इस्लाम स्वयं उत्तर देगा। जिन जातियों ने हम पर आक्रमण किए थे उन जातियों पर अब हम चढ़ाई करेंगे[1]। अतः ऐसा ही हुआ। अहज़ाब युद्ध में भला काफ़िरों की हानि ही क्या हुई थी, कुछ लोग मारे गए थे। वे दूसरे वर्ष पुनः तैयारी करके आ सकते थे। बीस हज़ार के स्थान पर वे चालीस-पचास हज़ार सेना भी ला सकते थे अपितु यदि वे और अधिक प्रबंध करते तो लाख-डेढ़ लाख की सेना लाना भी उनके लिए कठिन कार्य न था परन्तु इक्कीस वर्ष के सतत् प्रयास के पश्चात् काफ़िरों के हृदयों को आभास हो गया था कि ख़ुदा मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ है और उनकी मूर्तियां झूठी हैं तथा संसार का सृजनहार एक ही ख़ुदा है। उनके शरीर तो यथावत् थे, परन्तु

उनके हृदय टूट चुके थे। देखने में वे अपनी मूर्तियों के समक्ष सज्दह (दण्डवत्) करते हुए दिखाई देते थे परन्तु उनके हृदयों से 'ला इलाहा इल्लल्लाह' के स्वर निकल रहे थे।

मुसलमानों की विजय का प्रारम्भ

इस युद्ध से निवृत्त होने के पश्चात् रसूले करीम (स.अ.व.) ने फ़रमाया आज से काफ़िर हम पर आक्रमण नहीं करेंगे अर्थात् मुसलमानों की विपत्ति अपनी चरमसीमा को पहुँच गई है और अब उनका विजय युग प्रारम्भ होने वाला है। उस समय तक जितने युद्ध हुए थे वे सभी ऐसे थे कि या तो काफ़िर लोग मदीना पर आक्रमण करने आए थे या उनके आक्रमणों की तैयारियों को रोकने के लिए मुसलमान मदीना से बाहर निकले थे, परन्तु मुसलमानों ने कभी स्वयं युद्ध जारी रखने का प्रयास नहीं किया। हालांकि युद्ध के नियमानुसार जब एक युद्ध आरम्भ हो जाता है तो उसका अन्त दो ही प्रकार पर होता है। या तो संधि हो जाती है या एक पक्ष हथियार डाल देता है परन्तु इस समय तक एक भी अवसर ऐसा नहीं आया जबकि संधि हुई हो अथवा किसी पक्ष ने हथियार डाले हों। अतः यद्यपि प्राचीन काल के नियमानुसार लड़ाइयों में कुछ अन्तराल पड़ जाता था परन्तु जहाँ तक युद्ध के जारी रहने का प्रश्न था वह निरन्तर जारी था तथा समाप्त न हुआ था। इसलिए मुसलमानों का हक़ था कि वे जब भी चाहते शत्रु पर आक्रमण करके उन्हें विवश करते कि वे हथियार डालें परन्तु मुसलमानों ने ऐसा नहीं किया अपितु जब अन्तराल पड़ता था तो मुसलमान भी शान्त रहते थे। कदाचित इसलिए कि संभव है कि काफ़िर लोग इस मध्य संधि का प्रस्ताव रखें। और युद्ध समाप्त हो जाए परन्तु जब एक लम्बे समय तक काफ़िरों की ओर से संधि का प्रस्ताव न आया और न उन्होंने मुसलमानों के सामने हथियार डाले अपितु अपने विरोध में बढ़ते ही चले गए। अतः अब समय आ गया कि लड़ाई का दो टूक निर्णय किया जाए। या तो दोनों पक्षों में संधि हो जाए अथवा दोनों में से एक पक्ष हथियार डाल दे ताकि देश में शान्ति स्थापित हो जाए। अतः रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ने अहज़ाब युद्ध के पश्चात् निर्णय कर लिया कि हम अब दोनों निर्णयों में से एक निर्णय करके रहेंगे। या तो हमारे और काफ़िरों के मध्य संधि हो जाएगी अथवा हम में से कोई एक पक्ष हथियार डाल देगा। यह तो स्पष्ट है कि हथियार डालने की परिस्थिति में काफ़िर ही हथियार डाल सकते थे क्योंकि इस्लाम की विजय के बारे में तो ख़ुदा तआला की ओर से सूचना प्राप्त हो चुकी थी तथा मक्का के जीवन में रसूल करीम (स.अ.व.) इस्लाम की विजय की घोषणा कर चुके थे। शेष रही संधि, तो संधि के बारे में यह बात समझ लेना आवश्यक है कि संधि का प्रस्ताव या तो विजेता की ओर से हुआ करता है या पराजित की ओर से। पराजित पक्ष जब संधि की याचना करता है तो उसके अर्थ ये होते हैं कि वह देश का कुछ भाग या अपनी आय का कुछ भाग स्थायी अथवा अस्थायी तौर पर विजेता पक्ष को देगा या कुछ अन्य परिस्थितियों में उसके लगाए गए प्रतिबन्धों को स्वीकार करेगा। विजेता पक्ष की ओर से जब संधि का प्रस्ताव प्रस्तुत होता है तो उसका तात्पर्य यह होता है कि हम बिल्कुल नहीं चाहते कि हम तुम्हें कुचल डालें यदि तुम कुछ शर्तों के साथ हमारी आज्ञाकारिता तथा अधीनता स्वीकार करते हुए आदेशों का पालन करो तो हम तुम्हारी स्वतंत्र सत्ता अथवा अर्ध स्वतंत्र सत्ता को बना रहने देंगे। मक्का के काफ़िरों तथा मुहम्मद रसूलुल्लाह के मध्य होने वाले युद्धों में बार-बार काफ़िरों की पराजय हुई थी परन्तु इस पराजय का अर्थ मात्र इतना था कि उनके आक्रमण असफल रहे थे। वास्तविक पराजय वह कहलाती है जबकि प्रतिरक्षात्मक शक्ति क्षीण हो जाए। आक्रमण के असफल होने का तात्पर्य वास्तविक पराजय नहीं उसका तात्पर्य केवल इतना होता है कि यद्यपि आक्रमणकारी का आक्रमण असफल रहा परन्तु पुनः आक्रमण करके वह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा। अस्तु युद्ध आचार संहिता के अनुसार मक्का निवासी पराजित नहीं हुए थे अपितु उनकी स्थिति केवल यह थी कि अब तक उनकी आक्रामक कार्यवाहियां अपने लक्ष्य की प्राप्ति नहीं कर सकी थीं; इसकी तुलना में मुसलमान युद्ध की दृष्टि से यद्यपि उन की प्रतिरक्षण शक्ति नहीं टूटी थी पराजित कहलाने के अधिकारी थे। इसलिए कि एक तो वे अत्यल्प संख्या में थे, दूसरे उन्होंने उस समय तक कोई आक्रामक कार्यवाही नहीं की थी अर्थात् किसी आक्रमण में स्वयं पहल नहीं की थी जिस से यह समझा जाए कि अब वे स्वयं को काफ़िरों के प्रभाव से मुक्त समझते हैं। इन परिस्थितियों में मुसलमानों की ओर से संधि प्रस्ताव का अर्थ यह हो सकता था कि अब वे प्रतिरक्षण प्रक्रिया से तंग आ चुके हैं और कुछ देकर अपना पीछा छुड़ाना चाहते हैं। प्रत्येक बुद्धिमान समझ सकता है कि इन परिस्थितियों में यदि मुसलमान संधि-प्रस्ताव रखते तो इसका परिणाम नितान्त भयानक होता तथा यह बात उनके अस्तित्व को मिटा देने का पर्याय होती। अरब के काफ़िरों में अपनी आक्रामक कार्यवाहियों में असफलता के कारण जो निराशा उत्पन्न हो गई थी इस संधि-प्रस्ताव से वे तुरन्त ही नए उत्साह और नई उमंगों तथा नवीन आशाओं में परिवर्तित हो जाती और यह समझा जाता कि मुसलमान मदीना को विनाश से सुरक्षित रख लेने के बावजूद अपनी अन्तिम सफलता से निराश हो चुके हैं। अतः संधि का प्रस्ताव मुसलमानों की ओर से किसी भी अवस्था में प्रस्तुत नहीं किया जा सकता था। यदि कोई संधि का प्रस्ताव कर सकता था तो या तो मक्का वाले कर सकते थे या कोई तीसरी जाति मध्यस्थ बन कर कर सकती थी, परन्तु अरब में ऐसी कोई जाति नहीं रही थी। एक ओर मदीना था, दूसरी ओर सम्पूर्ण अरब था। अतः इस स्थिति में काफ़िर ही थे जो इस प्रस्ताव को प्रस्तुत कर सकते थे, परन्तु उनकी ओर से संधि का कोई प्रस्ताव नहीं आ रहा था। ये परिस्थितियां यदि सौ वर्ष तक भी जारी रहतीं तो युद्ध के नियमों के अनुसार गृह-युद्ध जारी रहता। अतः जब कि मक्का वालों की ओर से संधि-प्रस्ताव प्रस्तुत नहीं हुआ था तथा मदीने के लोग अरब के काफ़िरों की अधीनता स्वीकार करने के लिए किसी भी परिस्थिति में तैयार न थे तो अब एक ही मार्ग शेष रह जाता था कि जब मदीना ने सम्पूर्ण अरब के संयुक्त आक्रमण को असफल कर दिया तो मदीना के लोग स्वयं बाहर निकलें और अरब के काफ़िरों को विवश कर दें कि या तो वे इनकी अधीनता स्वीकार कर लें या उन से संधि कर लें। अतः रसूले करीम (स.अ.व.) ने यही मार्ग ग्रहण किया। अतः यद्यपि यह मार्ग प्रत्यक्ष रूप से युद्ध का मार्ग दृष्टिगोचर होता है परन्तु वास्तव में शान्ति की स्थापना के लिए इसके अतिरिक्त कोई अन्य मार्ग शेष न था। यदि मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) ऐसा न करते तो सम्भव है कि युद्ध सौ वर्ष तक लम्बा चला जाता। जैसा कि प्राचीन काल में ऐसी ही परिस्थितियों में युद्ध सौ-सौ वर्ष तक जारी रहे। स्वयं अरब के ही युद्ध तीस-तीस, चालीस-चालीस वर्ष तक जारी रहे हैं। इन युद्धों के लम्बे समय तक जारी रहने का यही कारण प्रतीत होता है कि युद्धों को समाप्त करने के लिए कोई साधन नहीं अपनाया जाता था। जैसा कि मैं वर्णन कर चुका हूँ कि युद्ध को समाप्त करने के दो ही उपाय हुआ करते हैं या तो ऐसा निर्णायक युद्ध किया जाए जो दो टूक निर्णय कर दे और दोनों पक्षों में से किसी एक पक्ष को हथियार डालने पर विवश कर दे अथवा परस्पर संधि हो जाए। मुहम्मद रसूलुल्लाह (स.अ.व.) निःसंदेह ऐसा कर सकते थे कि मदीना में बैठे रहते और स्वयं आक्रमण न करते परन्तु चूंकि अरब के काफ़िर युद्ध की नींव डाल चुके थे आप स. के ख़ामोश बैठने के ये अर्थ न होते कि युद्ध समाप्त हो गया है अपितु उसके ये अर्थ होते कि युद्ध का द्वार सदैव के लिए खुला रखा गया है। अरब के काफ़िर जब चाहते अकारण ही मदीना पर आक्रमण कर देते तथा उस समय के नियमानुसार वह सत्य पर समझे जाते क्योंकि युद्ध में अन्तराल आ जाना उस युग में युद्ध की समाप्ति का पर्याय नहीं समझा जाता था अपितु अन्तराल की गणना युद्ध में ही की जाती थी।

शेष ..

Editor: Shaikh Mujahid Ahmad
Dy. Editor: Syed Mohiuddin Farid
Editor : +91-9915379255
akhbaarbadarhindiqdn@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2026-2028 Vol. 11 Thursday 12 November 2026 Issue No. 46

Act. Manager
Athar Ahmad Shamim
Mobile : +91-9815639670
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 600/- (Per Issue : Rs. 12/-) (WEIGHT: 20-50 gms/issue)

सीरतुल-महदी

(लेखक: हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

विनीत निवेदन करता है कि हमारे पूर्वजों में से जो बुज़ुर्ग सबसे पहले भारत आकर बसे, उनका नाम मिर्ज़ा हादी बेग था। उनके भारत आकर बसने का समय लगभग 1530 ईस्वी मालूम होता है। अर्थात् ऐसा पता चलता है कि वे या तो बादशाह बाबर के साथ आए थे या उसके कुछ समय बाद। मिर्ज़ा हादी बेग साहब, हाजी बरलास की संतान में से थे, जो तैमूर के चाचा थे। मिर्ज़ा हादी बेग से लेकर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम तक का वंश-वृक्ष साथ दिए गए पृष्ठ पर दर्ज है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का वंश-वृक्ष

इस वंश-वृक्ष में जिन नामों के सामने तारे (*) का निशान लगाया गया है, वे ऐसे लोगों के नाम हैं जिनकी आगे कोई संतान नहीं हुई।

129 बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम।

विनीत निवेदन करता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने कई स्थानों पर अपने और अपने परिवार के हालात स्वयं अपने हाथ से लिखे हैं, लेकिन सबसे विस्तार से उनका जो वर्णन मिलता है, वह किताबुल बरिय्या में दर्ज है। ऐसा नहीं है कि इस वर्णन में सभी ज़रूरी बातें आ गई हैं और न ही यह कहा जा सकता है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने बारे में दूसरी जगहों पर जो हालात स्वयं लिखे हैं, वे सभी इसमें शामिल हैं। लेकिन चूँकि यह वर्णन सबसे अधिक विस्तार से है और हज़रत साहब ने एक विशेष कारण से इसे लिखा था, इसलिए इसके कुछ मुख्य भाग पाठकों के सामने प्रस्तुत करता हूँ। हज़रत साहब फरमाते हैं :

"अब मेरा जीवन-परिचय इस प्रकार है कि मेरा नाम ग़ुलाम अहमद है। मेरे पिता का नाम ग़ुलाम मुर्तज़ा, दादा का नाम अता मुहम्मद और परदादा का नाम गुल मुहम्मद था। जैसा कि बताया जा चुका है, हमारी जाति मुग़ल बरलास है। मेरे पूर्वजों के पुराने कागज़ात, जो अब तक सुरक्षित हैं, उनसे पता चलता है कि वे इस देश में समरकंद से आए थे। उनके साथ लगभग दो सौ आदमी थे, जिनमें उनके अधीन काम करने वाले लोग, सेवक और परिवार के सदस्य शामिल थे। वे एक सम्मानित और बड़े ज़मींदार की हैसियत से इस देश में आए थे।

वे उस स्थान पर आकर बस गए जहाँ उस समय जंगल हुआ करता था। यह स्थान लाहौर से लगभग पचास कोस उत्तर-पूर्व की ओर था। उन्होंने इस स्थान को आबाद किया और इसका नाम इस्लामपुरा रखा। बाद में यह इस्लामपुर क़ाज़ी माजही के नाम से प्रसिद्ध हुआ। धीरे-धीरे लोग इस्लामपुरा का नाम भूल गए। फिर क़ाज़ी माजही में से केवल क़ाज़ी रह गया और आगे चलकर क़ादी बन गया। इसके बाद बिगड़ते-बिगड़ते इसका नाम क़ादियान हो गया।

क़ाज़ी माजही नाम पड़ने का कारण यह बताया जाता है कि इस इलाके का लंबा भाग लगभग साठ कोस तक फैला हुआ था। उन दिनों यह पूरा इलाका माझ कहलाता था। संभवतः इसका नाम माझ इसलिए पड़ा कि इस देश में भैंसें बहुत अधिक होती थीं और हिंदी भाषा में भैंस को माझ कहते हैं। चूँकि हमारे पूर्वजों को गाँवों की ज़मींदारी के अलावा इस पूरे इलाके का शासन भी सौंपा गया था, इसलिए वे क़ाज़ी के नाम से प्रसिद्ध हुए।

मुझे यह मालूम नहीं कि हमारे पूर्वज किस कारण और क्यों समरकंद से इस देश में आए थे। लेकिन पुराने कागज़ात से पता चलता है कि वहाँ भी वे सम्मानित अमीरों और शासक परिवारों में से थे और किसी जातीय झगड़े तथा आपसी मतभेद के कारण उन्हें वह देश छोड़ना पड़ा था। इस देश में आने के बाद उस समय के बादशाह की ओर से उन्हें जागीर के रूप में बहुत से गाँव दिए गए। इस प्रकार इस इलाके में उनका अपना एक स्वतंत्र राज्य बन गया।

सिखों के शुरुआती समय में मेरे परदादा मिर्ज़ा गुल मुहम्मद इस इलाके के बहुत प्रसिद्ध और नामी जागीरदार थे। उस समय उनके पास 85 गाँव थे। सिखों के लगातार हमलों के कारण बहुत से गाँव उनके अधिकार से निकल गए। फिर भी उनकी बहादुरी और उदारता का यह हाल था कि इतने कम गाँव रह जाने पर भी उन्होंने आपसी भाईचारे के कारण कई गाँव कुछ झगड़ों में फँसे हुए मुसलमान जागीरदारों को दे दिए थे, जो आज तक उन्हीं के पास हैं।

संक्षेप में, उस अराजकता के समय में वे अपने इलाके के एक स्वतंत्र शासक थे। उनके यहाँ हमेशा लगभग पाँच सौ आदमी, कभी कम और कभी अधिक, उनके साथ भोजन करते थे। उनके पास लगभग सौ विद्वान, नेक लोग और पवित्र क़ुरआन के याद करने वाले रहते थे, जिनके लिए पर्याप्त खर्च निश्चित किया हुआ था। उनके दरबार में अक्सर अल्लाह और उसके रसूल की बातों का ज़िक्र होता रहता था।

इससे भी अधिक आश्चर्य की बात यह है कि उनके कई चमत्कार इतने प्रसिद्ध हैं कि धर्म के बहुत से विरोधी लोग भी उनकी गवाही देते रहे हैं। संक्षेप में, वे राज्य और धन-दौलत के अलावा अपनी ईमानदारी, परहेज़गारी, मर्दाना हिम्मत, दृढ़ निश्चय, धर्म की रक्षा और मुसलमानों के प्रति हमदर्दी के कारण भी बहुत प्रसिद्ध थे। उनकी सभा में बैठने वाले सभी लोग परहेज़गार, अच्छे आचरण वाले, इस्लामी स्वाभिमान रखने वाले, बुरे कामों और पापों से दूर रहने वाले, बहादुर और प्रभावशाली व्यक्तित्व के मालिक थे।

मैंने कई बार अपने स्वर्गीय पिता से सुना है कि उस समय एक बार मुग़ल सल्तनत का एक मंत्री क़ादियान आया था, जो ग़ियासुद्दौला के नाम से प्रसिद्ध था। उसने मिर्ज़ा गुल मुहम्मद साहब के शासन चलाने के समझदारी भरे तरीके, दूरदर्शिता, हिम्मत, दृढ़ निश्चय, अटलता, समझ-बूझ, इस्लाम की रक्षा, धर्म की सहायता के जोश, परहेज़गारी, पवित्रता और दरबार की शान को देखा। उसने उनके छोटे से दरबार को बहुत ही गंभीर, समझदार, अच्छे आचरण वाले और बहादुर लोगों से भरा हुआ पाया।

यह सब देखकर उसकी आँखों में आँसू आ गए और वह कहने लगा कि यदि मुझे पहले यह खबर मिल गई होती कि इस जंगल में मुग़ल परिवार का ऐसा व्यक्ति मौजूद है जिसमें राज्य चलाने के सभी आवश्यक गुण पाए जाते हैं, तो मैं इस्लामी सल्तनत को सुरक्षित रखने के लिए यह कोशिश करता कि चगताई बादशाहों के आलस्य, अयोग्यता और बुरे शासन के समय में इसी व्यक्ति को दिल्ली के तख्त पर बैठाया जाए।

यहाँ इस बात का उल्लेख करना भी उचित होगा कि मेरे यही परदादा मिर्ज़ा गुल मुहम्मद हिचकी की बीमारी के कारण, जिसके साथ कुछ दूसरी बीमारियाँ भी थीं, चल बसे थे। जब बीमारी बहुत बढ़ गई तो वैद्यों ने आपस में सलाह करके कहा कि यदि इस बीमारी में कुछ दिनों तक शराब पिलाई जाए तो संभवतः इससे लाभ हो सकता है। लेकिन उनमें इतनी हिम्मत नहीं थी कि वे यह बात सीधे उनकी सेवा में कह सकें। आखिरकार उनमें से कुछ लोगों ने बहुत नरमी से यह बात उनके सामने रख दी।

इस पर उन्होंने कहा कि यदि अल्लाह तआला को मुझे स्वस्थ करना मंज़ूर है तो उसकी पैदा की हुई और भी बहुत सी दवाएँ मौजूद हैं। मैं इस गंदी चीज़ का इस्तेमाल नहीं करना चाहता और मैं अल्लाह के फैसले और उसकी तक़दीर पर राज़ी हूँ।

आखिर कुछ दिनों बाद उसी बीमारी से उनका देहांत हो गया। मृत्यु तो निश्चित थी, लेकिन उनका परहेज़गारी का यह तरीका हमेशा के लिए यादगार बन गया कि उन्होंने शराब पीने के बजाय मृत्यु को स्वीकार कर लिया।

अब संक्षेप में बात यह है कि जब मेरे परदादा का देहांत हुआ तो उनके स्थान पर मेरे दादा मिर्ज़ा अता मुहम्मद, जो उनके योग्य बेटे थे, उनकी गद्दी पर बैठे। उनके समय में अल्लाह तआला की इच्छा और उसकी हिकमत से लड़ाई में सिखों का पलड़ा भारी हो गया।

मेरे स्वर्गीय दादा ने अपने राज्य की रक्षा के लिए बहुत से उपाय किए, लेकिन चूँकि अल्लाह की तक़दीर उनके इरादे के अनुसार नहीं थी, इसलिए वे सफल नहीं हो सके और उनकी कोई भी कोशिश कामयाब न हुई। सिख लोग दिन-ब-दिन हमारे राज्य के गाँवों पर कब्ज़ा करते चले गए। यहाँ तक कि मेरे दादा के पास केवल क़ादियान ही रह गया।

उस समय क़ादियान एक किले के रूप में बसा हुआ कस्बा था। उसके चार बुर्ज थे और उन बुर्जों में सेना के जवान रहते थे।" शेष ..

★ ★ ★

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad